स्मृति पटल से....

प. पू. अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य गुरुवर
श्री वसुनंदी जी मुनिराज की स्वर्ण जन्म जयन्ती
के अवसर पर प्रकाशित

कृति : स्मृति पटल से....

मंगलशीष : श्वेतपिच्छाचार्य श्री 108 विद्यानंद जी मुनिराज

लेखिका : आर्यिका 105 वर्धस्वनंदनी

प्राप्ति स्थान : निर्ग्रन्थ ग्रन्थमाला, बौलखेड़ा

पुण्यार्जक : श्रीमान् संजय जैन (कागजी)-श्रीमति सरिता जैन, विदिशा जैन, लक्ष्य जैन, लक्ष्मी नगर, दिल्ली।

संस्करण : द्वितीय सन् 2018-19

प्रतियाँ : 2000

मूल्य : 100.00 रूपये

प्रकाशन : निर्ग्रन्थ ग्रंथमाला

मुद्रक : ईस्टर्न प्रेस
नारायाण, नई दिल्ली-110028
दूरभाष: 011-47705544
ई-मेल: info@easternpress.in

अनुक्रमणिका

1. उत्थान का सूत्र 8
2. समता ही गुण 9
3. बच गया जीवन 10
4. और भर आया जल 11
5. बहुमुखी व्यक्तित्व 12
6. क्या सोचना नहीं पड़ता 14
7. भेद-विज्ञान 15
8. मिलोगे तुम निजालय में 16
9. रहो जमीन पर 18
10. अचानक छा गए बादल 19
11. विहार की विषमता में समता 20
12. फिर नहीं आया स्वप्न 21
13. द्रवित हृदयी 22
14. आज्ञानुवर्ती प्रकृति 23
15. एक उपसर्ग ऐसा भी 24
16. पूर्वाभासी 26
17. भक्ति की शक्ति 27
18. प्रतिकूलता में अनुकूलता 28
19. पहली सीख 29
20. अनुपम वात्सल्य 30
21. वात्सल्य रत्नाकर 31
22. आदर्श अनुशासक 33
23. हाँ ये सच है 35
24. भय भी होता है भयभीत 37
25. चन्द्रगुप्त सी गुरुभक्ति 38

26. लोह पुरुष 40
27. सकारात्मक दृष्टिकोण 43
28. निर्भीक व साहसी 45
29. तेरे काँटों से भी प्यार 47
30. महाशिल्पी 49
31. वेदना भी भूल गई वेदना 50
32. बरसाती रात 51
33. ज्योतिष विद्या के धनी 52
34. हे गुरुदेव प्रणाम आपके चरणों में 54
35. कल्पवृक्ष की छाँव 56
36. स्वाध्याय प्रेमी 58
37. करुणा के सागर 59
38. धन्य मुनिराज हमारे हैं 61
39. करते हैं असंभव को संभव 62
40. नान्यथा वादिनो मुनिः 63
41. परम उपकारी गुरुदेव 64
42. अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी 66
43. दृष्टि की व्यापकता 68
44. दिव्य साधक 69
45. जिनशासन के स्तंभ 70
46. आत्मवत् सर्वभूतेषु 72
47. पथ प्रदर्शक 74
48. गुण रत्नाकर 76
49. तेरा शुक्रिया है 77
50. वचन शक्ति 79

''पुरोवाक्''

असुहादो णिरयाउ, सुहभावादो हु सग्गसुहमाओ।
दुहसुहभावं जाणइ, जं ते रुच्चइ तं कुज्जा॥ र.सा.॥

अशुभ से नरकायु, शुभ भावों से स्वर्ग सुख प्राप्त होता है।
इस प्रकार सुख, दुख भाव को जानकर जो रुचे उसे करो।

जिनशासन में द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव का महत्वपूर्ण स्थान है। अनुकूल द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव के माध्यम से परिणाम अनुकूल बनते हैं और प्रतिकूल से प्रतिकूल। नवदेवताओं के बिंब, चित्र, स्तूप, जपमाला आदि उत्तम द्रव्य परिणामों की निर्मलता में निमित्त बनते हैं और क्रूर आकृति, मूर्ति या वीभत्स भयंकर दृश्यों के चित्र आदि अशुभ द्रव्य, अशुभ परिणामों के सृजक बन सकते हैं। मौसमादि की अनुकूलता परिणामों को अनुकूल बनाती है तो प्रतिकूलता प्रतिकूल। क्षेत्र का प्रभाव तो सर्व विदित है ही। प्रशस्त स्थानों पर हमारे अंतरंग का वातावरण भी प्रशस्त हो जाता है और अप्रशस्त स्थानों पर विकारों का प्रादुर्भाव होता है। यह तो कई बार अनुभव किया है कि विशुद्ध परिणाम वाले श्रावक, साधक व संत पुरुषों के पास बैठकर आत्म शांति का अनुभव होता है तथा क्रोधी, मानी छली-कपटी, कामी, क्रूर परिणाम युक्त व्यक्तियों की संगति परिणामों में विकृति का कारण बनती है।

गुरुवर श्री के जीवनवृत्त के पथ पर मेरे अनुभव, श्रवण व दृष्टिगोचर हुई घटनाओं ने मेरे वैराग्य को दृढ़ किया, श्रद्धा को सुस्थिर बनाया, भक्ति की वृद्धि हुई एवं जीवन में संयम का आविर्भाव हुआ। एक दिन मन में विचार आया कि क्यों न इन प्रसंग के बिखरे मोतियों को शब्दों में निबद्ध कर संस्मरणों की एक माला निर्मित कर दी जाए। महान पुरुषों का जीवन चरित्र, घटनाएँ बहुत से व्यक्तियों के जीवन को सम्यक् मार्ग प्रदान करने में निमित्त बनती है। संभव है इसे पढ़कर किन्हीं भव्यों की विशुद्धि बढ़ सके, चित्त धर्म में स्थिर हो सके, वैराग्य वृद्धि

को प्राप्त हो जीवन में उन्नति के सूत्रों की संप्राप्ति हो, आत्म कल्याण का विश्वास चेतना में जागृत हो, इन्हीं भावनाओं को लेकर कतिपय प्रसंगों को यहाँ हमने निबद्ध किया है।

इस कार्य में हमने एक धृष्टता अवश्य की है वह यह कि यह कार्य हमने पूज्य गुरुवर श्री से अनुमति प्राप्त किए बिना ही किया है। इसके लिए हम क्षमाप्रार्थी भी हैं। किन्तु यह भी सत्य है कि यदि हम अनुमति माँगते तो जैसे चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज ने पं. सुमेर चंद दिवाकर जी को व श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी महाराज ने सतीश जी को अपने जीवन से संबंधित कुछ भी लिखने के लिए निषेध आज्ञा दे दी थी उसी प्रकार मुझे विश्वास था कि गुरु जी हमें भी मना ही कर देंगे। किन्तु फिर भी भक्तिवश व अन्य लोग प्रेरणा प्राप्त कर सकें इसलिए उन्होंने आचार्यो की जीवन घटनाओं को लिपिबद्ध किया। आचार्य भगवन् श्री मानतुंग स्वामी ने लिखा है-

सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश
कर्तुं स्तवं विगत शक्ति रपिप्रवृत्तः।
प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगी मृगेन्द्रं
नाभ्येति किं निज शिशोः परिपालनार्थं॥

हे यतीश्वर! युगादिदेव! एक तो आप में चन्द्रमा के समान आह्लादक अमृतमय शीतल शान्त और उज्ज्वल कान्ति वाले अनंत गुण है, दूसरे मेरी बुद्धि अत्यंत अल्प है, तीसरे बाल चेष्टाओं से युक्त हूँ। इन असमर्थताओं के होते हुए भी जो मैं आपके गुण रूपी समुद्र को पार करने का असफल प्रयास कर रहा हूँ उसमे एक मात्र आपकी भक्ति की प्रेरणा ही मूल रूप से विद्यमान है। जैसे अपने शिशु पर झपटते हुए विकराल सिंह को देखकर प्रीति और परम वात्सल्य से प्रेरित हरिणी उसको बचाने के लिए अपनी शक्ति की परवाह न करके क्या उस सिंह का सामना नहीं करती? अर्थात् अवश्य करती है। हरिणी अपनी शक्ति को शिशु वात्सल्य के कारण भूल जाती है और मैं अपनी शक्ति को भक्ति के कारण भूल रहा हूँ।

हमने भी भक्तिवश ही यह लघु प्रयास किया है यह ऐसे ही है मानो सीप की अंजुरी में सागर को भरा जा रहा है। फिर भी भक्ति का अतिरेक हमें ऐसा करने के लिए प्रेरित कर रहा है। हमें लगा इसे लिखने से गुरुवर श्री की कोई क्षति नहीं है और भव्यों का कल्याण संभावित है। क्योंकि गुरुदेव तो अविनय, अपमान, अवहेलना, निंदा, प्रशंसा, स्तुति, भक्ति व उपाधियों आदि से परे होने के मार्ग पर गतिशील हैं। गुरुवर श्री का स्वर्णिम जन्मोत्सव भारत वर्ष में विभिन्न स्थानों पर मनाया जा रहा है तो हम भी स्वयं को रोक न सके और 50 प्रसंगों को लिपिबद्ध किया। यदि इसे पढ़ने से पाठकों को किंचित् भी लाभ होता है तो हम अपने इस प्रयास को सार्थक समझेंगे। इसे लिखने में हमें जो आनंदानुभूति हुई है उसे शब्दों में नहीं कहा जा सकता।

प्रस्तुत कृति ''स्मृति पटल से....'' में कोई त्रुटि रह गई हो तो विज्ञजन संशोधित कर पढ़ें। हंसवत् गुणग्राही दृष्टि से इसका अध्ययन करें। हंस अपने नीर-क्षीर विवेक गुण के कारण ही लोक में सम्मानीय होता है। यद्यपि लोक में जोंक की तरह दोष ग्रहण करने वाले व्यक्तियों की भी कमी नहीं है किन्तु आप सम सत्श्रद्धालु, भद्रपरिणामी आसन्न व्यक्तियों की अल्पता अवश्य है। यदि इस कृति से आप किंचित् भी लाभान्वित होते हैं तो हम अपने पुरुषार्थ को और अधिक सार्थक समझेंगे। पूज्य गुरुवर श्री का संयम पथ सदैव आलोकित रहे, आरोग्य की वृद्धि हो, इन्हीं भावनाओं के साथ आचार्य श्री के चरणों में सिद्ध, श्रुत, आचार्य भक्ति सहित त्रिकाल नमोस्तु-नमोस्तु-नमोस्तु

-आर्यिका वर्धस्वनंदनी

''उत्थान का सूत्र''

आचार्य श्री की प्रत्येक क्रिया-चर्या-व्यवहार प्रतिपल एक नया संदेश देती है, उनकी छत्रछाया में एक क्षण के लिए भी पहुँचते हैं तो जीवनोपयोगी सूत्र उनसे प्राप्त होते हैं। चातुर्मास का समय था संघ श्री जंबूस्वामी तपोस्थली बौलखेड़ा में विराजमान था। शाम को सभी मुनिराज और कुछ श्रावक आचार्य भक्ति हेतु छत पर पहुँचे। छत पर रखे तखत पर पूज्य गुरुदेव विराजमान हुए। एवं मुनिराजों को अपने निकट तखत पर बैठने को कहा। मुनि श्री ज्ञानानंद जी महाराज ने कहा महाराज जी हम आपके साथ कैसे बैठ सकते हैं यह तो गुरु का स्थान है और इतना कहते हुए एक बालक को पाटा लाने का संकेत किया। पूज्य गुरुदेव ने कहा देखो निर्ग्रन्थ मुद्रा सब की ही समान है। इतने में एक बालक छोटा पाटा लेकर आया व उसे तखत पर रखा। पूज्य गुरुदेव उस पर विराजित हुए और पुनः सभी मुनिराज तखत पर। गुरुवर श्री कुछ क्षण रुके और बोले देखा जो व्यक्ति दूसरों को ऊपर उठाने का प्रयास करता है वह पहले स्वयं उठ जाता है। अगर मैं मुनिराजों को ऊपर बैठाने की बात नहीं करता तो मैं कैसे ऊपर उठता। इतना सुन सभी लोग हँसने लगे।

बात तो बहुत सहजता की थी किन्तु गुरु जी के ये शब्द मेरे मानस पटल पर सदा के लिए अंकित हो गए। ऐसे एक नहीं सहस्रों जीवन के सूत्र गुरुवर श्री की चर्चा व चर्या से प्राप्त होते हैं।

''समता ही गुण''

गुरुवर श्री के सरल, सहज व्यक्तित्व और मृदुवाणी से कई लोगों के जीवन की दिशा व दशा दोनों परिवर्तित हुई। सन् 2013 में शिविर हेतु हम (बा ब्र. शिल्पी, साक्षी, श्रेया व संस्तुति दीदी) एक स्थान पर पहुँचे। (स्थान का नाम लेना हम यहाँ उचित नहीं समझते) शिविर प्रारंभ होने की पहली संध्या को समाज के व्यक्ति हमारे पास आए। हम मंदिर की सीढ़ियाँ उतर रहे थे उन्होंने हमसे कहा कि दीदी हमारे यहाँ कोई नहीं आता यदि आपके रुकने और आहार की व्यवस्था दूसरी समाज में कर दें तो। यह सुनकर हमने इशारे से सिर्फ इतना कहा कि इसका उत्तर आपको कल देंगे। हमारे मन में तो रात भर उथल-पुथल मची रही। समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें? प्रात:काल आशीष भैया को फोन लगाया और उनको सब बताकर कहा कि गुरु जी से पूछिये हम क्या करें।

गुरु जी ससंघ का विहार चल रहा था। कुछ क्षण पश्चात् भैया जी का फोन आया और बोले गुरु जी ने कहा है कि ''बेटा! समता ही अपना सबसे बड़ा गुण है।'' फिर क्या था इतने शब्द सुनते ही परिणामों का उद्वेग, मन की हलचल सब शांत हो गई। मंदिर पहुँचे वहाँ समाज के प्रतिष्ठित नागरिकों को सहजता से वात्सल्यपूर्वक कहा भैया! जब आपके यहाँ अतिथि आते हैं तो क्या पड़ोसी के यहाँ उनके भोजन या ठहरने की व्यवस्था करते हैं। यह सुनते ही वे लोग पानी-2 हो गए। बोले दीदी हम समझ गए हमसे बहुत बड़ी गलती हुई, हमें क्षमा करें। पुन: वहाँ धर्म की महती प्रभावना हुई।

पूज्य गुरुदेव के वे शब्द आज भी प्रत्येक स्थिति और परिस्थिति में कानों में गुंजायमान होते हैं जिन्होंने वास्तव में साधुता को जन्म दिया।

''बच गया जीवन''

''नान्यथा वादिनो मुनि:'' मुनियों के वचन अन्यथा नहीं होते। ऐसे एक नहीं सहस्रों लोगों के अनुभव हैं कि पूज्य गुरुदेव के मुख से जो निकलता है वह अमोघ ही है। जुलाई 2011 में आचार्य गुरुवर संघ सहित मवाना में विराजमान थे। पिछले कुछ दिनों से हम लोगों की भावना बद्रीनाथ यात्रा की बन रही थी। हमने गुरु जी से बद्रीनाथ यात्रा का निवेदन किया। गुरु जी ने कहा देख लो, बाद में कर लेना। हमने कहा गुरु जी यात्रा हो जाएगी तो ठीक रहेगा। पूरी व्यवस्था हो गयी। पवन भैया उत्तम नगर सब व्यवस्था गाड़ी आदि लेकर मवाना पहुँचे। जयपुर से भी बहनें (बा.ब्र. गरिमा व लद्यिमा दीदी)माता जी के पास से आ चुकी थीं।

शाम का समय था। सभी लोग तैयार थे, सामान गाड़ी में पहुँच चुका था। बस चल ही रहे थे। चलने से पूर्व हम सभी लोग श्रीफल अर्पित करने पूज्य गुरुदेव के पास पहुँचे। श्रीफल चढ़ाकर जैसे ही खड़े हुए गुरु जी ने कहा 'बेटा! मेरा मन तो नहीं हो रहा कि आप लोग जायें'। हमने कई बार देखा है कि गुरुजी जिस काम को मना करें उसे न करना ही अच्छा है अन्यथा कठिन परिस्थितियों से गुजरना पड़ सकता है। हमने कहा ठीक है गुरु जी हम बाद में ही चले जाऐंगे। गुरु जी ने कहा ठीक है। हम लोगों ने सारा सामान गाड़ी से मंगा लिया। पवन भैया आदि उत्तम नगर लौट गये और हम जयपुर।

लगभग तीन दिन बाद समाचार मिला कि बद्रीनाथ में भयानक बाढ़ आई है। उस समय बाढ़ में बहती गाड़ी, बस, लोगों के जो दृश्य हमने देखे उससे हमारा मन दहल उठा और परोक्ष में गुरु जी को नमोस्तु करते हुए कहा कि धन्य हैं गुरु जी जिनके कारण ऐसी स्थिति से बच गए, और हम सबका जीवन बच गया।

''और भर आया जल''

पूज्य गुरुदेव का बहुमुखी व्यक्तित्व सभी को उनकी ओर आकर्षित करता है। लोकव्यवहार में कहा जाता है कि सुंदरता और बुद्धिमानी का संयोग सरलता से नहीं मिलता। इसी प्रकार ज्ञान व तप का संयोग कठिनाई से ही प्राप्त होता है। ज्ञान की अभीक्ष्णता और तपस्या की दीप्ति एक ही व्यक्तित्व में सरलता से दृष्टिगोचर नहीं होती किन्तु यह दोनों ही गुरुवर श्री में दृष्टव्य है। चातुर्मास में कभी एक आहार एक उपवास करना, कवल चंद्रायण जैसे कठिन व्रतों को करना, कभी मात्र महिनों तक चने लेना किसी भी प्रकार से तपस्या करना गुरुवर श्री को प्रिय ही है। 12 अक्टूबर सन् 2008 तिजारा से गुरुवर श्री ने नीरस प्रारंभ किये जो लगभग छः माह तक चले। नवम्बर अंत में गुरु जी दीक्षा आदि के कार्यक्रम के लिए सीकरी पहुँचे। हम गृहत्याग कर उन्हीं दिनों आये थे। किन्हीं के यहाँ हम गुरु जी को आहार देने पहुँचे। नीरस तो था ही मोटी रूखी सूखी सी रोटी थी और सेंगरी की सब्जी जो देखने में घास लग रही थी। और गुरु जी को देखा तो रूखा आहार उतने ही वात्सल्य व प्रसन्न मुद्रा से ले रहे थे। यह दृश्य देख मेरी आँखों में जल भर आया और सोचा धन्य है साधुओं की तपस्या, धन्य है उनकी समता।

''बहुमुखी व्यक्तित्व''

क्या एक ही व्यक्ति हर क्षेत्र की इतनी जानकारियाँ रख सकता है? हर क्षेत्र में अग्रणीय रह सकता है? यह प्रश्न पूज्य गुरुदेव के बहुमुखी ज्ञान को देखकर मन में आया। सन् 2014 में गुरु जी का चातुर्मास अजमेर में चल रहा था। संघस्थ मुनि आदि के स्वास्थ्य की प्रतिकूलता होने पर वैद्य जी को बुलवाया गया। वैद्यजी ने मुनिराजों को देखा पुनः वहाँ गुरु जी के समक्ष उपस्थित हुए। पूज्य गुरुदेव की वैद्य जी से बातचीत के दौरान हम वहाँ उपस्थित थे। औषधि व लाभकारी वस्तुएँ गुरुवर श्री ने स्वयं वैद्यजी को बता दी। वैद्य जी ने किसी औषधि को देने को कहा तो गुरु जी बोले वैद्य जी यह औषधि उतनी लाभदायक नहीं है इसके स्थान पर यह अच्छी रहेगी। वैद्य जी बाद में बोले गुरु जी आपको तो आयुर्वेद का संपूर्ण ज्ञान है।

अजमेर की ही घटना है पूज्य गुरुदेव मदार में विराजमान थे। पवन बिरला पार्क आदि प्रतिष्ठित नागरिक पूज्य गुरुदेव के समक्ष तीर्थक्षेत्र के विषय में चर्चा कर रहे थे। संयोगवशात् हम वहीं बैठे हुए थे। वे लोग नक्शा दिखाते हुए कह रहे थे महाराज जी! इस जमीन पर स्टे ऑर्डर नहीं मिलेगा। गुरु जी ने देखा बोले इसको देखकर मैं कह सकता हूँ कि इस पर स्टे ऑर्डर मिल जाएगा। वे लोग बोले नहीं महाराज जी हमारा तो काम है प्रॉपर्टी का, हम कह रहे हैं कि स्टे ऑर्डर नहीं मिलेगा। गुरु जी कह रहे थे देखो! इस पर स्टे ऑर्डर मिल जाएगा। बाद में गुरु जी ने कहा ठीक है जाइये, आज वकील से मिलकर के आइये। वे लोग मिल करके आए और आकर बोले महाराज श्री क्षमा करें,

आप ठीक कह रहे थे। यह देखकर हम हैरान रह गए कि लॉ का ज्ञान गुरु जी को कैसे हुआ।

अजमेर में श्री जिनशासन तीर्थ क्षेत्र पर मंदिर निर्माण चल रहा था। शाम को गुरु जी संघ सहित क्षेत्र पर पहुँचे। लौटते समय गुरु जी की दृष्टि निर्माणाधीन चैत्यालय पर पड़ी वे तुरंत उस स्थान पर पहुँचे। उन्होंने वहाँ इंजीनियर से कहा देखो आपकी ये दीवार टेढ़ी जा रही है। इंजीनियर बोले महाराज जी ये तो सब नापकर कर रहे हैं, ये टेढ़ी नहीं होनी चाहिए। गुरु जी ने दिखाया कि देखो अभी जो ईंट लगायी हैं वे टेढ़ी हैं। इंजीनियर साहब ने देखा तो गुरु जी को नमन करके बोले महाराज जी! हमारा तो दिन रात का ये काम है फिर भी मैं देख नहीं पाया। आप लोगों की तपस्या व ज्ञान का प्रभाव सचमुच हर क्षेत्र में दिखायी देता है।

बौलखेड़ा में एक समय गुरु जी विराजमान थे। एक आर्किटेक्ट सुशील भैया पूज्य गुरुदेव के पास आए। श्री अजितनाथ चैत्यालय के निर्माण की बात थी। आर्किटेक्ट ने कहा कि महाराज जी ये तो नहीं हो सकता। तीसरी मंजिल पर मंदिर बनाना बड़ा मुश्किल है। गुरु जी ने उन्हें बैठाया और सारी बात समझायी। सब सुनकर वे बोले हाँ महाराज जी आपने बहुत अच्छी बात बतायी इस प्रकार से तो मंदिर बहुत सरलता से बन जाएगा। हम यह सब देख रहे थे। जब वे चले गए हम मुस्कराने लगे और हमने कहा गुरु जी आर्किटेक्ट वो थे या आप।

वास्तु, ज्योतिष, सिद्धांत, गणित या चाहे चिकित्सा, लॉ, निर्माण, कानून आदि कोई भी क्षेत्र हो किन्तु गुरुवर श्री सबसे शीर्ष पर ही दृष्टिगोचर होते हैं। गुरुवर श्री के इस अनूठे बहुमुखी ज्ञान पर सभी विस्मित होते हैं।

''क्या सोचना नहीं पड़ता''

आचार्य गुरुवर की तीव्र स्मरण शक्ति और ज्ञान का कहीं कोई तौल नहीं। एक घंटे में 25 श्लोकों को सरलता से याद करना 300 पृष्ठ की मोटी पुस्तक को भी कुछ ही घंटों में पढ़ डालना, कई वर्षों पहले पढ़े पाठ्यक्रम को भी ऐसे समझाना जैसे कल ही पढ़ा हो कई विस्मयकारी चीजें उनके व्यक्तित्व में दृष्टिगोचर होती हैं। 7 जुलाई 2016 में गुरु जी ससंघ जनकपुरी, जयपुर विराजमान थे। हमें भी गुरुवर श्री का मंगल सान्निध्य तब प्राप्त था। हम गुरुवर श्री के पास पहुँचे। वे कुछ चिंतन कर रहे थे। हम कुछ क्षण यूँ ही बैठे रहे पुनः आपस में इशारों से पूछने लगे आज क्या बात है? तभी गुरु जी ने कहा आज संस्कृति का ह्रास होता जा रहा है। उसका संरक्षण व संवर्द्धन आवश्यक है। आर्य संस्कृति के विषय में कुछ लिखना चाहिए। पुनः पूछा डायरी-पैन लाए हो। हमने कहा जी गुरु जी। बोले लिखो। वे प्राकृत में श्लोक बोलते जा रहे थे पुनः हिन्दी और हम लिखते जा रहे थे। जितनी तेजी से वे प्राकृत बोलते हैं लिखने वालों का पीछे रहना स्वाभाविक ही है। एक के बाद एक नये शीर्षक पर श्लोक लिखवाते जा रहे थे। लगभग 2½ घंटे में सत्तावन श्लोकों का वह ग्रंथ पूर्ण हुआ। तब हमारे मन में मात्र एक ही प्रश्न था-क्या गुरु जी को सोचना नहीं पड़ता?

पूज्य गुरुदेव ने प्राकृत में कई ग्रंथ लिखे-रट्ठसंतिमहाजण्णो, णंदिणंदसुत्तं, रयणकंडो, अज्ज-सक्किदी, जदि-किदि-कम्मं णिग्गंथ-थुदी, अप्प-विहवो, धम्म-सुत्तं, अप्प-सुत्तं, जोदिस-सत्थं, वत्थु-सत्थं, अंते समाहि-मरणं, जिणवरथोत्तं, जिण-वयण-सारो, विस्स-धम्मो, अहिंसगाहारो, विणय-सारो, तच्च-सारो, विज्जावसु-सावयायारो, णमोयार-महत्तणं, सरस्सदी-थुदी, भरदेस-थुदी इत्यादि।

''भेद-विज्ञान''

आचार्य गुरुवर का 2013 का चातुर्मास श्री जंबूस्वामी तपोस्थली, बौलखेड़ा में संपन्न हुआ। चातुर्मास के पश्चात् संघ का विहार प्रारंभ हुआ। बौलखेड़ा से सीकरी पहुँचे। सीकरी में गुरु जी के पैर में बालतोड़ हुआ। वह बालतोड़ घुटने पर हुआ था जिसके कारण घुटने पर सूजन आ गई। चलने में तकलीफ होना स्वाभाविक ही था। दिनेश भैया आदि सीकरी के सभी लोगों ने गुरु जी से रुकने का आग्रह किया। मुनि ज्ञानानंद महाराज जी आदि संघ ने भी गुरु जी से कहा गुरु जी ऐसी स्थिति में नहीं चला जा सकता। किन्तु गुरु जी तो विहार के लिए तत्पर थे। नौगांव के अशोक भैया आदि भी उपस्थित थे। गुरु जी ने विहार किया। 9 बालतोड़ पैर में हुए ऐसे में विहार करते हुए नौगांव पहुँचे। वहाँ हमने देखा दोनों पैर ही सूजे हुए थे।

दिन का समय था ज्ञानानंद जी महाराज फोड़ा फोड़ने लगे। हमसे देखा नहीं जा रहा था देखने वालों के चेहरे उनके दर्द का अनुभव कर विकृत हो गए थे किन्तु गुरु जी के चेहरे पर वही सहज मुस्कान जैसे कुछ हुआ ही ना हो। पूरा पस महाराज जी ने निकालकर बाहर कर दिया किन्तु गुरु जी की मुख मुद्रा नहीं बदली। हमने गुरु जी से पूछा गुरु जी इतने दर्द में भी आपके चेहरे पर शिकन नहीं। गुरु जी ने कहा ''दर्द आत्मा में नहीं शरीर में होता है और शरीर अपना है नहीं।'' इन शब्दों को सुन हम सोचने लगे भेद विज्ञान की चर्चा तो आसान है किन्तु चर्या बहुत कठिन।

''मिलोगे तुम निजालय में''

फरवरी 2012 में गुरु जी का विहार पंचकल्याणक के बाद जय शांति सागर निकेतन मंडोला से पंचकल्याणक हेतु शंकर नगर के लिए होना था। पिछले एक माह से रोज उल्टी होना, फिर आहार कम हो जाना, मात्र पेय लेना चल रहा था। और जैसा उनका स्वभाव है स्वास्थ्य की प्रतिकूलता को पता ही नहीं लगने दिया। सब पूछते तो कहते ''नहीं मैं बिल्कुल ठीक हूँ।'' विहार का समय आया। गुरु जी जीने से नीचे उतर रहे थे। ज्योति दीदी ने हमसे कहा दीदी आपने देखा। हमने पूछा-क्या हुआ दीदी। बोलीं ऐसा लगा कि गुरु जी को अभी चक्कर आया और उन्होंने पंकज भैया कृष्णा नगर का हाथ पकड़ लिया। विहार तो कर लिया किंतु उसके पश्चात् स्वास्थ्य अगले ही दिन तक इतना गिर चुका था कि दो कदम चलना भी मुश्किल था।

आशीष भैया और हम लोग आहार दे रहे थे। सत्यता ये है सामने दे रहे थे और पीछे रो रहे थे। इंद्रकुमार 'पोटी' भैया गुरु जी को पकड़कर खड़े थे। कुछ ही मिनटों में आहार ले गुरु जी वहीं बैठ गए और चार कदम आगे चल लेट गए। ऐसे में भी विहार कर शंकर नगर, दिल्ली पहुँचे। जो स्थिति और परिस्थिति उस समय थी उसका तो अंशतः भी वर्णन नहीं किया जा सकता किन्तु जब भी वह दृश्य सामने आता है आँखें भर जाती हैं। शंकर नगर मंदिर में गुरु जी जहाँ ठहरे थे वहाँ से केवल चार कदम की दूरी पर मंदिर था। ग.आ. विद्या श्री माता जी, ग.आ. गुरुनंदनी माता जी भी ससंघ उपस्थित थीं। भक्तों का सैलाब था, सभी की आँखें नम।

चार कदम की दूरी भी गुरु जी तय नहीं कर पा रहे थे। आहार सिर्फ तीन मिनट में और मात्र पेय। गुरुवर श्री का पूरा दिन बारह भावना सुनने, उसका चिंतन करने में जाता। ऐसे में वे जब प्रभु परमात्मा के दर्शन कर नहीं पाए तब उन्होंने भक्ति से परिपूरित हो एक भजन लिपिबद्ध किया जिसकी कुछ पंक्तियाँ यहाँ उल्लिखित हैं-

लगी है प्रीत मम तुमसे तो दर पे तेरे आना क्यों।
हरा मम चित्त ही तुमने तो अब तुमको मनाना क्यों॥
सुना है आप मिलते हैं, जिनालय में शिवालय में
मेरे चित में हो तुम अंकित, मिलोगे तुम निजालय में।
तुम्हीं वक्ता तुम्हीं श्रोता तो अपना दुख सुनाना क्यों॥
लगी है.....

''रहो जमीन पर''

कहा जाता है ''उगते हुए सूर्य को सभी प्रणाम करते हैं।'' पूज्य गुरुदेव की प्रभावना दिग् दिगन्त व्याप्त हो रही थी। एक समय जब 2014 का चातुर्मास अजमेर चल रहा था तब दूर-दूर से देश के विभिन्न स्थानों से लोग गुरु-दर्शन के लिए पधार रहे थे। कुछ विद्वानादि भी आए और गुरु जी के ज्ञान, तप, चर्यादि की प्रशंसा करने लगे। गुरु जी अपने लेखन में लगे रहे। हम भी वहाँ बैठे हुए थे अपने गुरु के लिए यह सब सुन हमें तो बहुत प्रसन्नता हो रही थी। जब सब लोग चले गए तो हम धीरे से आपस में कहने लगे ऐसा सुनने में अच्छा लगता है ना। गुरु जी की तीव्र श्रवण शक्ति से तो आप परिचित ही होंगे। उन्होंने सुन लिया और कहा ''बेटा! हाथ आकाश में भले ही बहुत ऊपर चले जायें, लेकिन पैर हमेशा जमीन पर ही रखना।'' और ''हम जो हैं वही बने रहें अब बाकी सामने वाले की नजर और उसका नजरिया।''

गुरुवर श्री की यह बात एक प्रकाश यंत्र के समान सदैव हमारा मार्ग प्रकाशित करती है। जिसने मान रूपी गिरी को पहले की चकनाचूर कर दिया।

''अचानक छा गए बादल''

मई 2007 को पंचकल्याणक हेतु पूज्य गुरुदेव संघ सहित सरधना पहुँचे। रात्रि 9.00 बजे गुरुवर श्री के पास सूचना पहुँची कि कल गर्भ कल्याणक है, सुबह से कार्यक्रम प्रारंभ होना है और अभी तक पांडाल तैयार नहीं है। सरधना के दो सौ युवा कार्यकर्ता पूज्य गुरुवर श्री के एक ही संकेत पर पूर्ण भक्ति, निष्ठा, समर्पण के साथ रात भर लगे रहे पूरी जमीन समतल की, स्टेज बनाया और सुबह तक पांडाल बनकर खड़ा हो गया। दो दिन गर्भ कल्याणक और ठंडी-2 हवा बहती रही। तीसरे जन्म कल्याणक वाले दिन बहुत तेज बारिश हुई। तप कल्याणक के दिन सूर्य भी प्रचंड ताप से निकला। ज्ञान कल्याणक वाले दिन भी सुबह से तेज धूप। प्रश्न आया कि समवशरण की रचना कहाँ हो? लोग गुरु जी के पास पहुँचे बोले महाराज जी क्या करें, पांडाल में अनुकूलता नहीं है और बाहर बहुत तेज धूप है। गुरु जी ने कहा चिंता मत करो, बाहर समवशरण की रचना करो सब ठीक होगा।

लोगों ने कहा महाराज जी बाहर कौन बैठेगा, बाहर भयंकर गर्मी है, अग्नि सी बरस रही है। गुरु जी ने कहा आप बाहर तैयारी करो, ''डोन्ट वरी'' लोग तैयारी कर रहे थे किन्तु, यहाँ बैठेगा कौन, इसकी चिन्ता निरंतर चल रही थी। रचना तो हो गयी पर लोगों का तनाव कम नहीं हुआ। दिन के 2.00 बजे जैसे ही समवशरण में पहुँचे आकाश में बादल छा गए और ठंडी-ठंडी हवा चलने लगी। बहुत सुंदर समवशरण की रचना हुई और कार्यक्रम संपन्न हुआ। गुरुवर श्री के जयकारों से वातावरण गूंज उठा। नवीन भैया आदि बोले गुरु जी आपके तप के प्रभाव से सब ठीक हो गया। गुरु जी ने बहुत सहजता के साथ कहा हमारा कुछ भी नहीं है, भगवान का काम वे स्वयं करा लेते हैं।

धन्य है गुरुवर का तप और इस पर उनकी सरलता व सहजता।

''विहार की विषमता में समता''

गर्मियों का समय था। बुलंदशहर पंचकल्याणक के लिए गुरुवर श्री ससंघ का बहुत तीव्रता से विहार चल रहा था। हाथरस के आस-पास उस समय विहार हो रहा था। शाम के समय गुरु जी का विहार हुआ। चंद्रगुप्त-चंदू भैया टूण्डला भी विहार में साथ ही थे। विहार तो हो गया किंतु जितने कि.मी. विहार बताया गया था, दूरी उससे ज्यादा निकली जिससे रात सी होने लगी। गुरु जी कहीं बीच रास्ते में ही रुके। रोड़ियों का ढेर पड़ा हुआ था, उन्होंने वहीं रात व्यतीत की। हम लोग (बा.ब्र.सौम्या, रज्जो, शिल्पी व साक्षी दीदी) उस स्थान से कुछ कि.मी. पहले कहीं रुके थे। प्रातः जब हम वहाँ से गुजरने लगे तब भैया ने हमें बताया कि गुरु जी ने रात को इन रोड़ियों के ढेर पर विश्राम किया। हमें यह देख बहुत दुःख हुआ। हमने बाद में पूछा गुरु जी क्या ऐसी परिस्थिति पहले भी कभी आई है। गुरु जी ने मुस्कुराते हुए कहा साधु जीवन है, विहार में कई बार ऐसी परिस्थितियों का होना संभव है।

तब हमारे मन में सुकुमाल मुनि का चिंतन आया और सोचा हर काल में सुकुमाल मुनि होते हैं जो पहले तो बहुत कोमल होते हैं और पश्चात् अपनी साधना में कंकरीले पत्थर, कंटीली झाड़ियों को भी उन्हीं समभावों से स्वीकार करते हैं।

''फिर नहीं आया स्वप्न''

मैं छोटी थी तभी से एक स्वप्न मुझे अक्सर आया करता था कि मैं आगे-आगे छिपती दौड़ रही हूँ और पीछे कभी तलवार या हिंसक शस्त्र ले मुझे कोई मारने आ रहा है। मैं डरकर उठती और रोने लगती। 2009 में गुरु जी का चातुर्मास मेरठ हुआ। गृहत्याग के पश्चात् यह हमारा प्रथम चातुर्मास था। गुरु जी कमला नगर मंदिर में ठहरे थे और हम मनोज भैया, पंकज भैया के यहाँ रुके थे। उस रात्रि वही स्वप्न पुनः दिखा और मैं फिर डर गयी। बा.ब्र. साक्षी दीदी भी उठ गयीं। पूछा क्या हुआ, मैंने सारी बात बतायी। हम प्रातःकाल पूज्य गुरुदेव के पास पहुँचे और गुरु जी को स्वप्न के विषय में बताया। गुरु जी ने मुस्कुराते हुए कहा ''बस इतनी सी बात, आज के बाद तुम्हें ऐसा स्वप्न कभी नहीं आयेगा।'' हम नमोस्तु कर चले गए। आज पूरे आठ वर्ष हो गए किंतु मुझे ऐसा स्वप्न फिर कभी नहीं आया।

सच गुरुओं का आशीष सदैव फलीभूत होता है।

''द्रवित हृदयी''

आचार्य गुरुवर ससंघ का मंगल प्रवेश जय शांतिसागर निकेतन, मंडोला में हुआ। सुबह भक्ति के पश्चात् गुरुवर श्री सबका स्वास्थ्य पूछ रहे थे। क्षुल्लक श्री सहजानंद महाराज जी अपना घुटना दिखाते हुए बोले देखो महाराज जी मेरा घुटना बहुत सूज गया, एकदम लाल पड़ गया है। इससे चला भी नहीं जाता। यह सुनकर गुरु जी ने तुरंत फुलवा तेल मंगाया और कहा क्षुल्लक जी महाराज इसको घुटने पर लगाकर मालिश करनी है। गुरु जी ने स्वयं तेल हाथ में लिया और क्षुल्लक जी के घुटनों पर वात्सल्य पूर्वक लगाते हुए बोले देखो ऐसे मालिश करना। क्षुल्लक जी महाराज पीछे खिसकने लगे बोले नहीं महाराज जी आप नहीं, आपसे थोड़े ही ना लगवाऐंगे। उनके मना करने के बाद भी गुरुवर श्री उन्हें कसके पकड़कर तेल लगाने लगे। हम लोग उस समय वहाँ उपस्थित थे। हम भी यह देखकर मुस्कुरा रहे थे। कई बार ऐसे दृश्य संघ में देखने को मिलते हैं। जब आचार्य महाराज मुनिराजादि की वैय्यावृत्ति करते हैं।

इसी प्रकार होडल पंचकल्याणक के समय मुनि श्री ज्ञानानंद जी महाराज के पेट में पथरी का बहुत तेज दर्द हुआ। रात्रि भर गुरुवर श्री उनके पास बैठे रहे और सहलाते रहे। मुनिराज श्री कहते हैं कि जितना गुरु जी अपने शिष्यों के लिए करते हैं, शायद ही माँ-बाप अपने बच्चों के लिए कर पायें।

वैय्यावृत्ति और सेवा का यह अद्भुत गुण गुरुदेव में परिलक्षित होता है और इसी के साथ संघ के प्रति अनुपम वात्सल्य भी दृष्टिगोचर होता है।

''आज्ञानुवर्ती प्रकृति''

गर्मी के समय गुरुवर श्री सन् 2002 में टूण्डला में विराजमान थे। चौराहे के श्री आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर में मानस्तंभ का महामस्तकाभिषेक होना था। गुरुवर श्री ने अभिषेक का मुहूर्त प्रातः 7.30 बजे निकाला। चंदू भैया, अनिल भैया आदि गुरु जी के पास पहुँचे कहने लगे महाराज जी! सुबह 7.30 बजे अभिषेक होना तो मुश्किल है। 8.00 या 8.30 तो बज ही जायेंगे। गुरु जी ने कहा नहीं, पहला कलश तो भगवान पर 7.30 बजे हो ही जाना चाहिए। अगले दिन बोली आदि के कारण देरी हो रही थी। सुबह ठीक 7.30 बजे देखते ही देखते आकाश में बादल छा गए और बहुत तेज वर्षा होने लगी। धुँआधार वर्षा के जल से पूरे मानस्तंभ का अभिषेक हुआ। 10 मिनट तक वर्षा हुई पुनः मौसम पहले की तरह ही साफ हो गया। विस्मयकारी यह दृश्य देख सभी लोग आनंदित हो उठे और कहने लगे जब महाराज जी ने कहा 7.30 बजे अभिषेक होगा तो कैसे नहीं होता देखो इंद्रों ने ही अभिषेक कर दिया और गुरुवर श्री की जयकारों से मंदिर का प्रांगण गुंजायमान हो उठा।

सच है प्राकृत रूप धारी यथाजात दिगंबर गुरु की आज्ञा में प्रकृति भी रहती है।

''एक उपसर्ग ऐसा भी''

1 जनवरी, 2009 में पूज्य गुरुदेव संघ सहित अतिशय क्षेत्र महावीर जी में विराजमान थे। ग.आ. गुरुनंदनी माता जी ससंघ वहीं विराजमान थीं। कुछ दिन पश्चात् महावीर जी से दोनों संघों का विहार साथ में प्रारंभ हुआ। हम सभी विहार करते हुए शाम के समय करमपुरा पहुँचे। रात्रि विश्राम वहीं करना था। मुनि संघ तो एक स्थान जहाँ पर 2-3 कमरे और खंडहर सा था वहाँ रुके और आर्यिका संघ के ठहरने की व्यवस्था पास में किसी के यहाँ की गई। हमने (बा.ब्र. सौम्या, शिल्पी, साक्षी दीदी और रजनी बाई ने) माता जी की वैय्यावृत्ति हेतु अंगीठी पर तेल में मैथी डाल गर्म किया। सबकी वैय्यावृत्ति की। बाई कमरे से बाहर निकलीं और चक्कर खाकर चौक में गिर पड़ीं। हम उन्हें उठाकर अंदर ले आए। आ. सौम्य नंदनी माता जी चटाई के अंदर काँप रही थीं। हमने सोचा ठंडी के कारण काँप रही हैं।

लगभग मध्य रात्रि में गुरुनंदनी माता जी का स्वास्थ्य बहुत प्रतिकूल हो गया। वहाँ ठहरे चंदू भैया की मम्मी आदि भी जोर से रोने लगीं। गुरु जी के पास समाचार पहुँचाया। पूज्य गुरुदेव, बा.ब्र. शुभाशीष भैया, चंदू भैया आदि आए तो देखा सभी की हालत बिगड़ी हुई है। गुरुवर श्री को यह समझते देर न लगी कि यह देवकृत उपसर्ग है। पूरे संघ पर यह बहुत ही भयंकर उपसर्ग था। आज भी वह रात याद आते ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। जैसे-तैसे निकालकर सभी को खंडहर में लाया गया और एक छोटे से कमरे में सभी माता जी आदि बैठ गए। जिसके सिर पर गुरु जी की पिच्छी लगती वह तो चुप हो जाता, बाकी सब रोने

लगते। कभी कोई उसी स्थान पर जाने की जिद करता। उस दिन हमने स्वयं पहली बार दैवीय शक्तियों का अनुभव किया।

पूज्य गुरुदेव ने कहा आप लोग कमरा बंद कर लो मैं बाहर बैठा हूँ, किसी को कुछ नहीं होगा। सभी लोग निराकुलता से सो गए। उपसर्ग की भयानक रात्रि व्यतीत हुई। सुबह उठकर ऐसा लगा जैसे पूज्य गुरुदेव की कृपा से हमें नवजीवन मिला।

प्रात:काल हमें ज्ञात हुआ कि रात्रि में हम जिस स्थान पर रुके थे वह स्थान किसी तांत्रिक का था जहाँ वह भूत-प्रेतों की झाड़ा फूँकी करता था।

प्रणाम करते हैं ऐसे गुरुवर के चरणों में जिनकी तप और साधना का प्रभाव मैंने साक्षात् देखा। नमन है ऐसे निर्ग्रंथ तपस्वी को जिनके चरणों में देव भी नमस्कार करते हैं।

''पूर्वाभासी''

फरवरी 2015 में आचार्य गुरुवर संघ सहित श्री जंबूस्वामी तपोस्थली बौलखेड़ा में विराजमान थे। शाम को लगभग 7.00 बजे क्षेत्र के महामंत्री श्री अरुण जी बंटी उनके ताऊ जी श्री सत्येन्द्र कुमार जी कामा एवं इनके दामाद श्री महेन्द्र बख्शी जी गुरुवर श्री के पास पधारे। श्री सत्येन्द्र जी दुखी व उद्वेलित थे। रुंधे हुए गले से बोले गुरु जी हमारी पत्नी का स्वास्थ्य बहुत खराब है। डॉक्टर ने जवाब दे दिया। उन्होंने प्रारंभ से ही बहुत धर्म किया है मैं चाहता हूँ कि धर्म ध्यान के साथ ही उनका शरीर छूटे उनकी भी यही इच्छा है। गुरु जी ने कहा ''आपकी भावना बहुत उत्कृष्ट है किन्तु उनके पास समय अधिक नहीं है। देर न करें, ले आऐं।'' वे बोले महाराज जी अभी तो बड़ा मुश्किल है। उन्हें कल ले आयेंगे। पूज्य गुरुदेव पुनः बोले देख लो, लाना है तो अभी ले आइये, कल मिट्टी लाकर क्या करोगे? वे लोग उन्हें लाने चले गए किन्तु उस रात्रि ''श्रीमती जी'' को नहीं ला सके। अगले दिन प्रातः 9-10 बजे लाने की तैयारियाँ कर ही रहे थे कि उनका आयुकर्म पूर्ण हो गया।

जब यह समाचार हमने सुना तो हम अवाक् रह गये कि गुरु जी ने ठीक कहा था ''कल मिट्टी लाकर क्या करोगे।'' वास्तव में निर्मल चित्त के धारक साधकों को कई बार घटनाओं का पूर्वाभास हो जाता है।

''भक्ति की शक्ति''

सन् 2008 में पूज्य आचार्य गुरुवर ससंघ राधेपुरी, दिल्ली में विराजमान थे। गुरु चरणों में समर्पित श्री प्रवीण कुमार जी एवं श्रीमती संगीता जी गुरु दर्शन को राधेपुरी पधारे। जब ये पहुँचे तब संघ में भक्ति पाठ चल रहे थे। श्रीमती संगीता जी का स्वास्थ्य प्रतिकूल था। सर्वाइकल के दर्द के कारण उन्हें बहुत चक्कर आते थे। डॉक्टर ने कुछ Exercises बतायी थीं और एक पट्टा बांध ने को कहा था। वह उस पट्टे को गले में बांध गुरु जी के पास पहुँची। गुरु जी ने उस पट्टे का कारण पूछा तो उन्होंने दुखी मन से गुरु जी को सब बताया। गुरु जी ने कहा चिंता मत करो, आज ही ये पट्टा उतर जाएगा और फिर कभी लगाना भी नहीं पड़ेगा। अभी भक्ति चल रही है यहीं हाथ जोड़कर बैठो, हम एकीभाव स्तोत्र का पाठ करेंगे उसे पूर्ण श्रद्धा भक्ति से सुनना। उन्होंने ऐसा ही किया और बताया कि पाठ करते समय गुरुवर की विशुद्ध मुखमुद्रा को देख ऐसा लग रहा था जैसे साक्षात् वादिराज स्वामी ही पाठ कर रहे हों। स्तोत्र पाठ पूर्ण हुआ वे स्तोत्र पाठ के बाद उठीं कुछ देर बाद उन्होंने अपना पट्टा उतारा और गर्दन घुमाई तो दर्द का अनुभव भी नहीं हुआ। पश्चात् उन्होंने कई दिनों तक एकीभाव स्तोत्र का पाठ किया और फिर पुनः न कभी पट्टे की जरूरत पड़ी और न ही दर्द हुआ।

प्रणाम है ऐसे आचार्य गुरुवर को जो स्तोत्रादि के पाठ से श्रावक की भक्ति, निष्ठा को पुष्ट करते हैं और जिन धर्म की शक्ति दर्शाकर उन्हें सम्यक् पथ पर अग्रसर करते हैं।

''प्रतिकूलता में अनुकूलता''

पूज्य आचार्य गुरुवर श्री वसुनंदी मुनिराज ससंघ का विहार जनवरी 2009 में तिजारा की ओर चल रहा था। पूरी दोपहरी विहार कर संघ एक गवर्मेंट स्कूल में पहुँचा। जिस कमरे में गुरु जी व अन्य मुनिराज पहुँचे उसमें ऊपर बहुत सारे रोशनदान थे। सर्दियों में हवा तो एक छेद से भी कितनी तेज आती है, फिर ऊपर इतने रोशनदान और इस पर भी नग्न दिगंबर वेष। गुरु जी का चटाई का त्याग तो काफी समय से था ही, ऐसे में रात्रि कैसे बीते। उस कक्ष में खड़े होकर भी ऐसा लग रहा था जैसे कहीं खुले में ही खड़े हों। आमने-सामने रोशनदानों से बहती हवा और कड़ाके की ठंड। हम देख रहे थे जहाँ हम वस्त्रधारी सिकुड़ रहे हैं वहाँ पूज्य गुरुवर आराम से बैठे हैं भक्ति कर रहे हैं।

शुभाशीष भैया बोले गुरु जी ऐसी ठंडी में रात कैसे कटेगी। गुरु जी ने कहा ''जब हम प्रतिकूलताओं को भी अनुकूलता मानकर स्वीकार करते हैं तब वे प्रतिकूलताएँ भी प्रतिकूलताएँ नहीं रहतीं, अनुकूलता बन जाती हैं। सोचो रुकने के लिए चार दीवारी और छत तो मिली। और नींद नहीं आएगी तो जाप लगाने का अच्छा अवसर, खूब जाप लगाओ वरना रात सो कर गवाँ देते।'' सही है जीवन में जब परेशानियों को भी अनुकूलता मान स्वीकारते हैं तो उनका आभास नहीं होता और उसमें भी कुछ श्रेष्ठ प्राप्त किया जा सकता है।

''पहली सीख''

हम 2008 में गृह त्याग कर आत्म कल्याणार्थ गुरु चरणों में पहुँचे। गुरु उस प्रकाश स्तंभ के समान हैं जो जीवन की अंधेरी राहों को प्रकाश से परिपूरित कर देते हैं। गुरु का निरुक्ति अर्थ भी कहा है-

गुशब्दस्त्वंधकारे च, रुशब्दस्तन्निवर्तकः।
अंधकार विनिश्चत्वात्, गुरु संज्ञा विधीयते॥

'गु' का अर्थ है अंधकार व 'रु' का अर्थ है उसको नष्ट करने वाला। अज्ञान रूपी अंधकार का विनाश करने वाले होने से गुरु संज्ञा जानी जाती है।

हम भक्ति कर गुरु चरणों में बैठे। पूज्य गुरुदेव ने कहा ''बेटा! ये मोक्षमार्ग कहने का नहीं सहने का है। चाहे शब्दों के बाण हों या जीवन की प्रतिकूलता उसे सहा जाता है। और एक बात-जिस प्रकार पक्षी अपने दो पंखों से आकाश में उड़ता है उसी प्रकार मोक्षमार्गी भी ज्ञान और वैराग्य रूपी पंखों से मोक्षमार्ग में गतिमान होता है। जिस प्रकार एक पंख का पंछी आकाश में उड़ नहीं सकता उसी प्रकार ज्ञान या वैराग्य एक से भी रहित मोक्षमार्ग में चल नहीं सकता।''

जिस प्रकार ग्रीष्मकाल की धूप या बरसात से एक छाते के माध्यम से बचा जा सकता है उसी प्रकार गुरुवर श्री की इस सीख ने मुझे वह छाँव प्रदान की जिससे भव संताप से बचकर मोक्षमार्ग पर बढ़ा जा सके।

''अनुपम वात्सल्य''

पूज्य गुरुवर की वात्सल्य रूपी गंगा में अवगाहन करने वाले गुरुवर श्री के वात्सल्य से परिचित ही हैं। लोगों का ये कहना है कि बस महाराज जी की एक पुचकार हमारे सभी कष्टों को भुला देती है। जैसे धूप से संतप्त पथिक को वृक्ष के नीचे सुख-शांति का अनुभव होता है उसी प्रकार संसार से संतप्त प्राणियों को गुरु चरणों में सुख शांति की प्राप्ति होती है। कोई भी आयु वर्ग हो चाहे बच्चा, युवा, प्रौढ़ या वृद्ध सभी के प्रति गुरुवर श्री का अनुपम वात्सल्य दृष्टिगोचर होता है। यूँ तो कई बार गुरु जी को बच्चों से भी बात करते देखा है किंतु ना जाने वह घटना मुझे क्यों आकर्षित करती है। गुरु जी ससंघ भोगल दिल्ली में विराजमान थे। हम भी दर्शनार्थ वहाँ पहुँचे। स्वाध्याय, प्रवचनादि के पश्चात् गुरु जी पाटे से खड़े हो शुद्धि के लिए जा ही रहे थे। इतने में दो छोटे-छोटे लगभग 5-7 वर्ष के बच्चे गुरु जी के पास आये और हाथ जोड़कर खड़े हो गए। उनकी मुख मुद्रा को देखकर गुरु जी ने पूछा ''बच्चों! क्या कुछ पूछना है?'' बच्चे बोले हाँ महाराज जी और इतना सुनते ही गुरु जी वापिस पाटे पर आकर बैठ गए। बच्चों की कुछ छोटी-छोटी धर्म संबंधित शंकाओं का समाधान किया।

हम यह देख सोच रहे थे कि पंचपरमेष्ठी में परिगणित ये महान् आचार्य किस प्रकार वात्सल्य से परिपूरित हैं। कई बार लोगों ने कहा महाराज जी! आपको देख आचार्य विमल सागर जी महाराज की याद आती है। उनके पश्चात् यदि ऐसा वात्सल्य कहीं मिला तो आपके चरणों में। उस पर भी गुरु जी की इतनी सरलता सहजता और लघुता उन्होंने हाथ जोड़कर कहा भैया मैं तो बहुत छोटा हूँ वो तो बहुत बड़े आचार्य थे, उनका वात्सल्य तो अद्भुत ही था।

''वात्सल्य रत्नाकर''

पूज्य गुरुदेव का अपने संघ के प्रति एक अपरिमित वात्सल्य उनकी इसी पंक्ति से दिखाई पड़ता है जब वे कहते हैं कि ''मुनिराज से लेकर ब्रह्मचारी तक मेरा प्रत्येक संघस्थ वसुनंदी ही है। मैं किसी को कम नहीं मानता।'' गुरु के अतिरिक्त संघ के प्रत्येक मुनि आदि के प्रति विनम्रता का जो पाठ गुरु जी ने सिखाया वह सदैव आचरणीय है। गुरु जी ने सदैव कहा कि आपको संघ का कोई भी बड़ा समझा सकता है, गलती पर टोक भी सकता है। छोटे बड़ों की विनय करें यही उनकी शालीनता है और उन्नति का मार्ग है तथा बड़े छोटों को वात्सल्य दें यही उन्हें गौरवान्वित करता है।

दिल्ली से अजमेर का विहार जून की तपती गर्मी में चल रहा था जब रास्ता भी ऐसा लगता मानो उस पर अंगारे ही बिखरे हों। सभी लोग शाम लगभग 6 से 8 कि.मी. और सुबह 12 से 13 कि.मी. विहार करते। इतनी गर्मी में नवदीक्षित ऐलक श्री प्रज्ञानंद जी, श्रद्धानंद जी, शिवानंद जी, प्रशमानंद जी का आकुल-व्याकुल होना संभावित ही था। मात्र इन्हें ही नहीं गर्मी की व्याकुलता तो सबको ही थी विहार तो सभी कर रहे थे। ऐसे में गुरु जी पहले अन्य महाराजों को आहार कराते। हम महाराज जी को आहार दे रहे थे, महाराज जी ने लेने के लिए मना किया तब गुरु जी ने पुचकारते हुए कहा ''ले लो महाराज जी, आप लोगे तो मेरा पेट भर जाएगा।'' माँ के समान गुरुवर श्री का यह वात्सल्य नेत्रों को अश्रुपूरित कर देता है।

गुरुवर श्री से संबंधित ऐसी कई घटनाएँ हैं-

एक बार स्वाध्याय के समय मुनि श्री प्रज्ञानंद महाराज जी को नींद आ गई। वे आगे-पीछे होने लगे। किसी ने गुरु जी को इशारा करते हुए कहा गुरु जी देखो महाराज जी सो रहे हैं तब बहुत स्नेहपूरित मुस्कान के साथ गुरु जी ने उन्हें देखा और कहा कोई बात नहीं, सोने दो बहुत थक गये होंगे।

2017 का चातुर्मास पूज्य गुरुवर का दिल्ली ग्रीनपार्क में चल रहा था। रक्षाबंधन-वात्सल्य पर्व पर आचार्य श्री श्रुतसागर जी मुनिराज भी आए। गुरु जी का प्रवचन हुआ पश्चात् मुनि श्री संयमानंद जी महाराज का स्वास्थ्य प्रतिकूल होने से गुरु जी पिछले कुछ दिनों की भाँति उस दिन भी उन्हें आहार कराने पहुँचे। आचार्य श्री श्रुतसागर जी महाराज नीचे प्रवचन दे रहे थे ऊपर गुरु जी मुनि श्री का आहार करा रहे थे। आचार्य श्री श्रुतसागर जी महाराज ने तब अपने प्रवचन में कहा-"हम तो यहाँ औपचारिक रूप से वात्सल्य पर्व मना रहे हैं लेकिन प्रैक्टिकल देखना है तो ऊपर जाकर के देखो।" वास्तव में वात्सल्य का सिंधु पूज्य गुरुवर श्री में, उनकी वाणी व व्यवहार से दृष्टिगोचर होता है। जिससे मन से एक ध्वनि उनके प्रति निकलती है-हे वात्सल्य रत्नाकर ज्ञात होता है कि श्वेत रुधिर युक्त तीर्थकरों में भी ऐसा ही वात्सल्य होता होगा।

''आदर्श अनुशासक''

जहाँ गुरुवर श्री नवनीत के समान कोमल हृदयी हैं वहीं अनुशासन प्रिय भी। पूज्य गुरुदेव ससंघ का 2010 का चातुर्मास श्री जंबूस्वामी तपोस्थली, बौलखेड़ा में हुआ। वहाँ प्रत्येक स्वाध्याय-चर्या भक्ति आदि का समय नियत था। सुबह लगभग 6.00 बजे एक कक्षा-सर्वार्थसिद्धि की परिभाषाएँ, पश्चात् भक्ति, उसके बाद श्री रत्नकरण्ड श्रावकाचार और पुनः अष्ट पाहुड़ की कक्षा लगती। फिर सभी आहार चर्या को जाते। दोपहर 3.00 बजे जैन सिद्धान्त प्रवेशिका व उत्तर पुराण का स्वाध्याय तथा संध्याकाल में प्रतिक्रमण व भक्ति। सभी कक्षाओं के पूर्व एक घंटी बज जाती थी। पहली घंटी प्रातः 4.00 बजे बजती थी जो सामायिक का समय था। फिर प्रातः 6.00 बजे जब कक्षा शुरु होती थी सभी मुनि आदि जल्दी से कक्षा स्थल पर पहुँचते थे। दिन-भर कक्षा से पूर्व घंटी बज जाती थी यदि कोई देर से पहुँचता या अपना आसन शास्त्रादि नहीं लाता तो उसे प्रायश्चित भी दिया जाता था।

उस चातुर्मास में हमने विभिन्न विषयों की 27 परीक्षाएँ दीं। जिसका प्रश्नपत्र गुरु जी स्वयं बनाते थे। और प्रश्न-पत्र इतना कठिन बनाते थे वे कहते थे यदि मेरे बनाये प्रश्न-पत्र में कोई 33 अंक भी ले आया तो मैं उसे उस विषय का ज्ञाता मान लूँगा और आशीर्वाद भी दूँगा। उस समय गुरु जी ने हमें पहली बार कर्म प्रकृति-बंध, उदय, सत्त्वादि पढ़ाया। हम बहुत सारी बहनें थीं। परीक्षा की तैयारी में 11 बजे सोते और सुबह 3.00 बजे फिर उठ जाते। हर 2-4 दिन के अंतराल में परीक्षा होती थी।

गुरुवर श्री का यह अनुशासन संघ में सदैव रहता है और

वे कहते भी हैं ''तुम समय की कीमत करो, समय तुम्हारी कीमत करेगा। प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करो।'' यहाँ तक कि गुरु जी विहारादि में भी गाथा, श्लोकादि कंठस्थ करते व कराते हुए चलते हैं। कई बार प्रज्ञानंद जी आदि महाराज जी आकर बताते थे कि आज हमने इतने श्लोक कंठस्थ किए। विहार में चलते-चलते 25-30 गाथा व श्लोक सहजता में कंठस्थ हो जाते थे।

''हाँ ये सच है''

अप्रैल 2011 में पूज्य गुरुदेव ससंघ हस्तिनापुर में विराजमान थे। तब गुरु जी वैराग्य मणिमाला एवं परीक्षा मुख पढ़ा रहे थे। कक्षा में पढ़ते-पढ़ते किसी बात पर देवों का प्रकरण आया। तब उन्होंने एक घटना सुनायी जो उस समय की थी जब श्रेयांसगिरी में 1998 का चातुर्मास चल रहा था। पर्यूषण पर्व में श्रावक साधना शिविर चल रहा था। सुबह ध्यान फिर विधान, दिन में कक्षादि के कार्यक्रम विधिवत् चल रहे थे। देवेन्द्र नगर के बट्टू भैया ने आकर गुरु जी से कहा महाराज जी जब सुबह ध्यान होता है तो 18-20 फुट का एक आदमी घूमता सा दिखाई देता है। यह बात कई और भी लोगों ने कही। गुरु जी ने कहा व्यंतर-देवादि का वास यहाँ है।

एक व्यक्ति बोला महाराज जी ये व्यंतर देवादि कुछ भी नहीं होते सब बनावट है, ढोंग है और यदि देव हैं तो प्रमाण दें, दिन में लगभग 2.00 बजे जब तत्त्वार्थ सूत्र की कक्षा चल रही थी। इतना कहना ही था कि अचानक से स्वच्छ आकाश में काले बादल छा गए। प्रमोद जी देवेन्द्र नगर, प्रेमचंद देवेन्द्र नगर, अशोक जी खबरा, पवन कुमार जी सलेहा, अशोक वैशाली पन्ना, अनिल कुमार पन्ना आदि 70-80 शिविरार्थी वहाँ उपस्थित थे। बहुत भयंकर तफूान आया। चक्रवर्ती हवा चली जो पांडाल लगा हुआ था जिसके गाटर 2½ फीट अंदर गढ़े हुए थे वे गाटर भी मुड़ गये एवं पांडाल के पाइप तूफान से 600 फीट दूर जाकर गिरे। पूरा पांडाल तहस-नहस हो गया। लोग भागे-भागे गुरु जी के पास पहुँचे बोले महाराज जी! अब क्या होगा? बा.ब्र. इंद्रकुमार

पोटी भैया बड़े बाबा के पास पहुँचे। गुरु जी ने हवन सहित जाप लगवायी। गुरुजी ने जाप लगाई और हवन ब्र. अरविंद भैया से कराया जो वर्तमान में मुनि श्री प्रार्थना सागर जी हैं।

कुछ समय जाप-हवनादि के पश्चात् तूफान शांत हुआ। तूफान और कहीं नहीं था केवल उसी क्षेत्र में था। यहाँ तक कि पहाड़ के दूसरी ओर भी कुछ नहीं था। किंतु आश्चर्य की बात यह थी पांडालादि सब कुछ तहस-नहस होने के बाद भी मांडला जैसा था वैसा ही बना रहा। जो भगवान सिंहासन पर विराजित थे वे भी स्थिर रहे। 108 कलश छत्रादि वे भी ज्यों के त्यों रहे और जलता हुआ छोटा सा दीप भी वैसे ही जलता रहा।

पुनः गुरु जी ने कहा बेटा जीवन में अपमान और तिरस्कार कभी किसी का न करो।

''भय भी होता है भयभीत''

फरवरी 2015 में पूज्य गुरुदेव ससंघ श्री जंबूस्वामी तपोस्थली बौलखेड़ा में पंचकल्याणक हेतु पहुँचे। पंचकल्याणक के समय एक दिन रात्रि लगभग 8.00-9.00 बजे बहुत तेज तूफान आया। कारण कि उस समय कोई व्यक्ति अशुद्धि में पांडाल में प्रवेश कर गया था। पहाड़ी पर हवा के तीव्र वेग ने सभी के हृदयों में भय उत्पन्न कर दिया। तूफान कितनी तेज था उसका अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि 1.5 टन का गेट बाउंड्री के अंदर से उड़कर बाउंड्री के बाहर पहुँचा और श्री राजेन्द्र प्रसाद जी ग्रीन पार्क, दिल्ली जो उस समय वहाँ उपस्थित थे उनकी गाड़ी के पास गिरा। क्षति के नाम पर मात्र गाड़ी के गेट का शीशा चटका बाकी गाड़ी ज्यों की त्यों रहीं। अन्य गाड़ियाँ भी वहाँ सुरक्षित रहीं। प्रतिष्ठाचार्य श्री मनोज शास्त्री जी आदि रात्रि में गुरु जी के पास पहुँचे। गुरु जी के निर्देशानुसार मनोज भैया आदि ने हवन कराया और इधर गुरु जी ने जाप लगाई। पुनः कुछ ही देर में तूफान रुक गया। इतने भयंकर तूफान में भी मंच पर जिनप्रतिमा, मांडला, छत्र, दीपकादि ज्यों के त्यों रहे।

सत्य है गुरु की छत्रछाया जिसे प्राप्त हो उसके निकट आने में भय भी भयभीत होता है, दुनिया की कोई शक्ति उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकती।

''चन्द्रगुप्त सी गुरुभक्ति''

देहरा तिजारा के अध्यक्ष श्री ज्ञानचंद जी से चर्चा चल रही थी तब उन्होंने बताया फरवरी 2009 में क्षेत्र पर चंद्रगिरी चौबीसी के पंचकल्याणक पूज्य गुरुदेव के ससंघ सान्निध्य में होने थे। संयोगवशात् उपाध्याय श्री गुप्ति सागर जी महाराज के भी आगमन की सूचना प्राप्त हुई। व्यवहार कुशलता व विनम्रता के लिए आदर्श रूप पूज्य गुरुदेव ने उनकी अगवानी की। चारों ओर उत्साह, प्रसन्नता का माहौल था। ज्ञानचंद जी आचार्य श्री विद्यानंद जी महाराज के पास कार्यक्रम हेतु आशीर्वाद लेने पहुँचे। आचार्य श्री से चर्चा हुई और अन्य साधुओं के आगमन के विषय में भी बताया। मुनीश्वर प्रसाद जी भी वहाँ उपस्थित थे। आचार्य श्री ने कुंदकुंद भारती के मानस्तंभ की 4 प्रतिमाएँ सौंपते हुए कहा कि निर्णय सागर जी को ये प्रतिमाएँ प्रतिष्ठा के लिए दे देना। और कहा प्रशस्ति पर ना किन्हीं अन्य साधुओं का नाम आएगा और ना ही मेरा। यह सब बातें पूज्य गुरुदेव के पास पहुँचीं।

गुरु के प्रति अत्यंत भक्ति, विनय, समर्पण भावना से युक्त उपाध्याय श्री निर्णय सागर जी महाराज ने स्पष्टतया कह दिया कि ''ऐसा कैसे हो सकता है कि आचार्य श्री का नाम प्रशस्ति पर न आए। यदि मेरे गुरु जी का नाम नहीं आएगा तो मेरा भी नाम नहीं आएगा।'' उनसे ऐसा होता भी कैसे? गुरु के प्रति समर्पित किसी भी शिष्य से ऐसा नहीं हो सकता था। अतः हुआ वही जो होना था। प्रशस्ति सदैव की तरह लिखी गई। बहुत ही उत्साहपूर्वक चंद्रगिरी की चौबीसी का पंचकल्याणक संपन्न हुआ। मानस्तंभ की प्रतिमाएँ भी कुंदकुंद भारती पहुँच गईं। गुरु जी भी

कुछ ही दिन में वहाँ पहुँचे। आचार्य श्री ने प्रशस्ति पढ़ी और कहा अरे मैंने मना किया था ना कि मेरा नाम प्रशस्ति पर न आये। गुरुवर श्री ने तुरंत विनम्रतापूर्वक कहा "महाराज जी! ऐसा कभी हो सकता है क्या-कि आपका नाम न आये और मेरा नाम आये। मेरे नाम के साथ आपका नाम हमेशा रहेगा ही रहेगा।" यह सुनकर आचार्य श्री मुस्कुरा गए।

गुरुवर श्री की गुरु भक्ति भी कमाल की है। हमने जब भी गुरुवर श्री को उनके गुरु के चरणों में बैठे देखा है तो ऐसा लगता है मानो एक भोला अबोध बालक अपनी माँ के पास बैठा हो। हमने प्रारंभ से गुरु जी की एक ही बात सुनी है जब भी कोई पंचकल्याणक या बड़ा कार्यक्रम हुआ तो एक ही बात कहते हैं सब मेरे गुरु जी का आशीर्वाद है। वे समय-समय पर गुरु की आज्ञा लेकर ही आगे कार्य करते हैं। गुरु की आज्ञा तो उनके लिए पत्थर की लकीर है। गुरु के प्रति कृतज्ञता का उनका भाव अत्यंत अद्भुत व भावभीना है। गुरु जी की एक और विशेषता है कि वे अपने गुरु की प्रत्येक बात का उत्तर हाथ जोड़कर व सीमित शब्दों में देते हैं। पूज्य गुरुदेव से जब भी हम उनके गुरु के विषय में सुनते हैं, जब वे उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं तो लगता है कि चंद्रगुप्त की ऐसी ही भक्ति भावना अपने गुरु भद्रबाहु स्वामी के प्रति रही होगी।

''लोह पुरुष''

पूज्य गुरुदेव का 2005 का चातुर्मास शौरीपुर में हुआ। जहाँ जंगली जानवरों का आवागमन था। अनेक प्रतिकूलताओं में भी समता को धारण करते हुए गुरुवर श्री का चातुर्मास संपन्न हुआ। चातुर्मास में उन्होंने 32 दिन का कवलचंद्रायण व्रत किया। 35 णमोकार मंत्र आदि के व्रत किये। शरीर में कमजोरी आना तो स्वाभाविक ही था। चातुर्मास के पश्चात् शमशाबाद की समाज की भावना और उत्साह को देखते हुए अष्टाह्निका विधान कराने गुरुवर शमशाबाद पहुँचे। बाहर पांडालादि लगा बड़ी भक्ति भावना के साथ श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान प्रारंभ हुआ। कमजोर शरीर उसमें विहार और प्रथम दिन ही अंतराय हो गया। दूसरे दिन भी आहार ठीक न हो सका। तीसरे दिन अचानक बुखार और (खूनी दस्त) पेचिश हो गयी। पहले दिन 28-30 बार और दूसरे दिन 45-50 बार शुद्धि के लिए जाना पड़ा। रात्रि में वे मूर्च्छित हो गए।

उस समय साथ में मात्र मुनि श्री शिवसागर जी मुनिराज थे। ऐ.श्री विमुक्त सागर जी व क्षु. श्री विशंक सागर जी महाराज तब शौरीपुर ही थे क्योंकि उनके कुछ नियम अधूरे थे और गुरु जी को लौटकर वहीं जाना था। रात्रि में गुरुदेव की अचेत दशा को देखकर समाज में उथल-पुथल हो गयी। पूरा समाज बाहर इकट्ठा हो गया। डॉ. त्यागी को बुलाया। उन्होंने नाड़ी देखी और बी.पी. चेक किया। उस समय बी.पी. नीचे का 25 और ऊपर का 50 रह गया था। वे बोले यदि इन्हें बचाना चाहते हो तो अभी एडमिट करा दो। हैप्पी भैया फिरोजाबाद तब साथ में थे उन्होंने

सागर, जबलपुर, इंदौर, दिल्ली आदि फोन लगाया समाचार मात्र एक ही मिला कि बचाना चाहते हो तो बिना देर किये एडमिट करा दो।

इन शब्दों ने लोगों के हृदयों को शोकाकुलित कर दिया। आचार्य श्री विद्यानन्द जी मुनिराज के पास रातों-रात व्यक्ति पहुँचा, समाचार भेजा वे बोले अभी जैसे हो स्वास्थ्य ठीक करें मेरा आशीर्वाद है सब ठीक होगा। कहीं भक्तों की सिसकियाँ, कहीं पांडाल में एकत्रित हो णमोकार मंत्र का पाठ इस कोलाहल से गुरुवर श्री की मूर्च्छा टूटी। सामने दृश्य को देख हैरान थे डॉ. कह रहा था भाई तुरंत इलाज नहीं कराया तो बचेंगे नहीं, बचना असंभव है। अपनी चर्या में सुदृढ़ गुरुवर श्री ने मौन तोड़ते हुए कहा ''डॉक्टर साहब! कल तक मुझे कुछ नहीं होगा। मुझे आपकी दवाईयों की आवश्यकता नहीं। आप भी यही हैं मैं भी यही हूँ, कल आप आ जाना मैं ऐसे ही बैठा मिलूँगा।''

सुबह 3-4 बजे फिरोजाबाद से श्री अशोक जी 'लाले चाचा' बिहारी लाल वैद्य को लेकर आये। वैद्य जी ने तुरंत बादाम के तेल में केसर मिलवाकर पूरे शरीर पर मालिश करायी। थोड़ी देर बाद देखा तो नीचे का बी.पी. 50 और ऊपर का 80 हो गया। वैद्य जी पास में बैठे रहे। आहार के समय औषधि के साथ केला व खिचड़ी चलवायी। पश्चात् कुछ स्वास्थ्य में अंतर आया। शाम तक बी.पी. 80 व 120 हो गया। शाम को डॉ. त्यागी पुनः आए और गुरुवर श्री को देख करके बोले ''ये तो लौह पुरुष हैं, इन्हें तो मौत भी नहीं मार सकती। ये तो अपनी इच्छा से जीने वाले हैं।''

गुरुवर श्री का ऐसा आत्मबल ऐसा साहस कि विज्ञान के समक्ष भी चुनौती खड़ी कर दी। आत्मबल क्या होता है इसे समझने के लिए गुरुवर श्री के जीवन में एक नहीं सहस्रों घटनायें हैं। पूज्य गुरुदेव ने विश्व को दिखा दिया कि आत्म-बल से बढ़कर कोई बल नहीं।

''सकारात्मक दृष्टिकोण''

सन् 2009 का चातुर्मास महती प्रभावना के साथ मेरठ महानगर में चल रहा था। पूज्य गुरुदेव को भक्तामर व्रत के 48 उपवास करने थे किंतु आचार्य श्री विद्यानन्द जी महाराज ने गुरु जी को संकेत दिया कि महाराज जी उपवास करने से शरीर क्षीण होता है, खुश्की आती है और पानी की कमी होती है इसीलिए दूध, पानी के साथ व्रत करो। उस चातुर्मास में दो दिन एक कॉलोनी में, दूसरे दो दिन दूसरी कॉलोनी में, अत्यंत व्यस्ततम कार्यक्रम पुनः विहारादि के कारण वे व्रत न हो पाये। सन् 2010 का चातुर्मास श्री जंबूस्वामी तपोस्थली बौलखेड़ा हुआ। वहाँ एक आहार फिर दूध पानी से व्रत यही क्रम रहता। तब गुरु जी को थोड़ा जुकाम सा हुआ। दूसरे दिन टॉन्सिल और साथ में बुखार हो गया। रविवार का दिन था दूर-दूर से भक्त गुरुदर्शन के लिए उनकी वाणी को सुनने के लिए आए थे। हर रविवार क्षेत्र पर प्रवचन होते। उस दिन स्वास्थ्य ठीक न होने से गुरुवर श्री प्रवचन स्थल पर नहीं गए, बाकी पूरा संघ गया।

अचानक से श्री अजय जी कमला नगर, मेरठ भागे-भागे हमारे पास आए। बोले, दीदी सफेद कपड़ा चाहिए अभी जल्दी से। हमने पूछा भैया क्या बात है इतना घबरा क्यों रहे हो। बोले दीदी महाराज जी को 108 बुखार है। हम सुनकर स्तब्ध रह गये। हमने कहा ''भैया आपको पता है आप क्या कह रहे हो, 108 भी कोई बुखार होता है। आपने ठीक से तो देखा है ना।'' भैया गये और हमें थर्मामीटर लाकर दिखाया। हमने सभी महाराज जी को समाचार भेजा।

ऐसे व्यक्ति को मैं देवता कहूँ, भगवान कहूँ या कोई महापुरुष। हमने देखा गुरु जी टिककर बैठे हुए हैं। हमने पूछा गुरु जी स्वास्थ्य? तो मुस्कुराते हुए बोले ठीक है। हम देख रहे थे कि एक सिर-दर्द में भी जहाँ हमारे चेहरे पर शिकन आ जाती है वहाँ उनके मुख पर कुछ भी विकृति नहीं। और यह बात मात्र तब की नहीं, हमेशा देखा है कि दर्द कभी उनके चेहरे पर नहीं दिखता। श्री ज्ञानचंद जी, नरेन्द्र जी आदि भैया लोग तिजारा से गुरुवर श्री के दर्शनार्थ आए। गुरु जी का स्वास्थ्य प्रतिकूल देख तुरंत वे तिजारा से वैद्य जी को लेकर आए। दो-चार दिन तो गुरुवर ने मात्र मूंग की दाल का पानी ही लिया। औषधि से धीरे-धीरे स्वास्थ्य भी ठीक हो गया।

संघस्थ मुनिराज ने दुखी मन से कहा महाराज जी आपको कितने संघर्षों का सामना करना पड़ा है। गुरु जी ने कहा चिंता मत करो प्रकृति उसे उतना ही देती है जितना वह सहन कर सकता है और फिर ये रोगादि कर्म निर्जरा में कारण बनते हैं। गुरुवर श्री का यह सकारात्मक दृष्टिकोण सदैव सभी को नव उत्साह, उमंग और जीवन जीने के लिए सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करता है।

''निर्भीक व साहसी''

सन् 2010 में पूज्य गुरुदेव ससंघ चातुर्मास हेतु जब जंबूस्वामी तपोस्थली बौलखेड़ा पहुँचे, उस समय वह जंगल सा ही दिखाई देता था। वहाँ एक श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर और मात्र कुछ कक्ष। उस स्थान पर ऊँचे-ऊँचे पहाड़, चट्टान, पेड़-पौधे, जंगली जानवरों की आवाजादि से ऐसा प्रतीत होता था मानो अरण्य में ही खड़े हों। पेड़ शून्यस्थानादि को चीरती समीर और उससे उत्पन्न कुछ भयावह आवाजें चित्त में कदाचित् भय उत्पन्न करती थीं। गुरु जी, क्षु. श्री विशंक सागर जी महाराज चर्चा कर रहे थे। हम भी वहाँ पहुँचे। बातों ही बातों में हमने कहा कभी-कभी यहाँ डर सा लगता है। क्षुल्लक जी महाराज बोले यहाँ डरने जैसा क्या है? गुरु जी की निर्भीकता का यदि एक अंश भी आ जाये तो भय भी तुम्हें भयभीत नहीं कर सकेगा।

तब उन्होंने बताया सन् 1997 में गढ़ाकोटा में शिविर लगाने के पश्चात् 18 मई को वहाँ से विहार किया। रेहली पटनागंज, देवरी, बीनाबारा होते हुए महाराजपुर पहुँचे। वहाँ से नरसिंहपुर जाना था। लोगों ने भक्तिवशात् गुरुवर श्री को रोका किंतु साधु तो उस प्रवाहिनी के समान हैं जिन्हें रोका नहीं जा सकता। लोगों ने कहा महाराज जी बीच में रुकने का कोई स्थल नहीं और रास्ते में एक बहुत भयानक स्थान है झिरा घाटी, वहाँ व्यंतरादि का भी निवास है, शेर आदि जंगली जानवर वहाँ पानी पीने तालाब पर आते हैं। बहुत भयंकर शब्द वहाँ कर्णगोचर होते हैं। बस वहाँ से शीघ्रातिशीघ्र निकल जाना। गर्मियों का समय था बातों-बातों में शाम के 5.30-5.45 हो गए। गुरु जी का ससंघ विहार हुआ। उस समय साथ में क्षु. श्री शीलसागर, क्षु. श्री विशंक सागर व

क्षु. श्री कुंदकुंदसागर जी थे। निकले ही थे कि कुछ दूरी पर गुनौर के व्यक्ति आ गए। देर तो हो ही रही थी कुछ देर और हो गई। गढ़ाकोटा के 8-10 युवक अंकित, आशीष, अनिल, गंपू, मनीष चौधरी, अरविंद, राजकुमार जी हटा वाले आदि लोग विहार में साथ थे। गुरुवर श्री संघसहित विहार करते हुए अपनी मंजिल तक नहीं पहुँच पाए और मार्ग में ही रात हो गई। संयोगवशात् जहाँ पर वे थे वह स्थान था झिरा घाटी। लोग घबराने लगे कहने लगे महाराज जी अब क्या होगा? रात्रि में रुकने का यहाँ कोई स्थान नहीं है मात्र कुछ कब्रें हैं और बाकी जंगल।

क्षु. श्री शीलसागर जी महाराज कहने लगे महाराज जी यहाँ तो भूत-प्रेत घूमते रहते हैं मैंने गृहस्थ अवस्था में स्वयं अपनी आँखों से देखा भी है। लोग भी कहने लगे महाराज जी अब क्या करेंगे? गुरु जी ने कहा करना क्या है सूर्यास्त हो गया है हम यहीं रुकेंगे। लोग डरने लगे। गुरु जी बोले "डरने की आवश्यकता नहीं है। क्षुल्लक जी महाराज! एक बड़ा गोल घेरा यहाँ खींच दो।" क्षुल्लक जी ने वैसा ही किया। पुनः गुरु जी ने कहा आप सभी लोग इस घेरे के अंदर आ जाएँ। रात्रि भर इसी में रहें किसी को कुछ नहीं होगा लेकिन कोई इससे बाहर न जाएँ। रात्रि में शेर भी पानी पीने आया किंतु चुपचाप लौट गया। सभी की रात्रि सुरक्षित व्यतीत हुई और प्रातःकाल वहाँ से विहार हुआ। ऐसे एक नहीं सहस्रों प्रसंग हैं जहाँ महाराज जी की निर्भीकता दृष्टिगोचर होती है। हमने जैसे ही यह घटना सुनी हमें आश्चर्य भी हुआ और प्रसन्नता भी। हमने कहा ठीक कहते हो क्षु. जी महाराज यदि इनकी निर्भीकता का 1% भी आ जाए तो भय हमारे पास न आ पाए। गुरु जी ने कहा संसार व पापों से भयभीत रहो, बाकी सदैव निर्भीकता के साथ जीवन जीओ।

''तेरे काँटों से भी प्यार''

1998 में श्रेयांसगिरी चातुर्मास के पश्चात् पूज्य गुरुदेव ससंघ खबरा पहुँचे। शाहगढ़, बण्डा, ककरवाह, दलपतपुर व आहार जी इन स्थानों से श्रावक पंचकल्याणक की प्रार्थना ले गुरुचरणों में पहुँचे। सभी पंचकल्याणक का समय लगभग आसपास ही था। शाहगढ़ में आ. श्री देवनंदी जी के सान्निध्य में पंचकल्याणक हुआ। बाकी सभी स्थानों पर गुरुवर श्री पहुँचे। पुनः विहार कर नयावर्ष मनाते हुए मोहंदरा, पवई होते हुए हटा पहुँचे। वहाँ लगभग 16 दिन की वाचना व पंचकल्याणक सम्पन्न हुए। हटा से बक्सवाह जाना था। वहाँ से बक्सवाह जाने के लिए शॉर्ट रास्ते का पता किया। 25-26 जनवरी का दिन था। लोगों ने बताया शाम को सातपुर विश्राम कर लें और सुबह बक्सवाह पहुँच जाऐंगे। दिन में 1.00 बजे विहार हुआ। क्षु. श्री कुंदकुंद सागर व क्षु. श्री विशंक सागर जी महाराज साथ में थे। विहार में गुलाबचंद बड़ौदा, राजकुमार हटा, लक्ष्मीचंद भैय्यन सातपुर, अशोक कोतमा, जिनेश मास्टर, कमलेश, जसवंत, आशीष, रूपेश, मनीष चंदेरिया, पवन जैन, नत्थू फल वाले, अरविंद नामदेव इत्यादि लोग साथ में थे।

गुरु जी और साथ में ब्र. अरविंद भैया गढ़ाकोटा आगे थे। दोनों क्षुल्लक जी महाराज पीछे रह गए। गुरु जी ने लोगों से कहा जाओ, देखकर आओ क्षुल्लक जी महाराज कितनी पीछे हैं। गुरु आज्ञा पाकर लोग क्षुल्लक जी को देखने चले गए। पुनः क्षुल्लक जी सालपुर पहुँच गए। किंतु आश्चर्य तब हुआ जब वहाँ गुरु जी व ब्र. जी नहीं पहुँचे। गुरु जी ने भी सोचा था कि बस हम पहुँच गए किन्तु दिन छिपने को था और गाँव कहीं नजर नहीं आ

रहा था। ठंडी-ठंडी बर्फीली हवा जो सीने को पार ही कर रही थी। दूर-दूर तक सिर्फ खेत ही खेत, भीलादि तीर कमान लेकर खड़े थे, अपने-अपने खेत की रक्षा कर रहे थे। दिगंबर वेष और सर्दी की रात्रि। ज्वार-बाजरे का सूखा चारा जहाँ पड़ा था उसी की आड़ में गुरु जी बैठ गए और ब्रह्मचारी भी। भील लोग वहाँ उनके पास आकर खड़े हुए और बोले बाबा दूध ले लो, पानी ले लो। ब्र. भैया ने कहा ये कुछ नहीं लेंगे। वे लोग लौट गए। उस समय गुरु जी 1-2 चटाई लेते थे किंतु ऐसी भयानक सर्दी, खुले आकाश के नीचे आज कुछ भी नहीं। रात्रि हो चुकी थी तो गुरु जी सामायिक पर बैठ गए।

उधर सातपुर में श्रावकों की उथल-पुथल कि सूर्यास्त हो गया आखिरकार गुरुवर कहाँ हैं? वे लोग आवाज लगाते-लगाते उस ओर पहुँच गए जहाँ गुरुवर श्री विराजमान थे। किंतु गुरु जी सामायिक पर बैठे थे रात्रि में मौन था क्या कहते लोग आवाज लगा रहे थे, ब्रह्मचारी भैया भी कुछ न बोले। इतने में भीलों ने कहा एक बाबा वहाँ खेत के उस ओर बैठे हैं। तब लोग वहाँ रात्रि 11.00 बजे के लगभग पहुँचे। वह शीत रात्रि व्यतीत हुई और सुबह सातपुर पहुँचे। पुनः बक्सवाह के लिए विहार हुआ।

सही कहा है साधु जीवन तलवार की धार पर चलने के समान है। शत-शत नमन उन गुरु के चरणों में जो जीवन की प्रतिकूलताओं को भी सहर्ष स्वीकार करते हैं और समतामय परिणामों के साथ अपने लक्ष्य की ओर गतिमान रहते हैं।

''महाशिल्पी''

एक समय संघ में पढ़ाई की चर्चा चल रही थी। ऐलक विज्ञान सागर जी महाराज बोले अरे पढ़ना या पढ़ाना सीखना हो तो गुरु जी से सीखो। उन्होंने बताया 1991 में जब वे ब्र. हरीशचंद्र थे तब वे गुरु जी को आहार देने जाते थे। और गुरु जी आहार के समय भी गाथाओं को दोहराते रहते थे। आहारादि के समय भी उनका उपयोग गाथाओं को याद करने, दोहराने में, शास्त्राध्ययन में लगा रहता। और हम तो पढ़ते नहीं थे। वे याद करने के लिए कहते थे और हम करते नहीं थे। संभव है यदि शिष्य पाठ याद न करे तो गुरु दंड दें प्रायश्चित दें। द्रोणगिरी की बात है पूज्य गुरुदेव ने कहा ''यदि तुम मुझे गाथा नहीं सुनाओगे तो मेरा दूध का त्याग।'' 2-4 दिन दूध का त्याग भी उनका हुआ।

ब्र. जी बोले महाराज जी दूध का त्याग आप क्यों करते हो, मैं करुँगा। गुरु जी ने कहा नहीं त्याग तो मैं ही करुँगा। अब तो ब्र. भैया के हृदय में एक अद्भुत हलचल मची। सुबह 4.00 बजे उठकर पहले गाथा याद करते और सोचते कब जाकर गाथा सुना आऊँ। ऐलक जी बोले आज जो मैंने ज्ञान अर्जन किया है वह इन्हीं का उपकार है।

सत्य है शिल्पी यदि कुशल हो तो पत्थर को तराशकर मूर्ति बना देता है। गुरुवर श्री वास्तव में महाशिल्पी हैं। पढ़ाने की इतनी लगन बहुत कम देखने में आती है। पढ़ने की लगन से युक्त या अध्ययनशील लोग तो कंथचित् दृष्टिगोचर होते हैं किन्तु पढ़ाने के लिए त्याग करने वाले प्रायः दृष्टिगोचर नहीं होते। ये उज्ज्वल व्यक्तित्व जो आत्म कल्याण के साथ-साथ परकल्याण में भी निहित है, प्राणी समूह के द्वारा सदैव वंदनीय है।

''वेदना भी भूल गई वेदना''

ईर्यापथ प्रतिक्रमण पूर्ण हुआ। प्रसंगवशात् ऐलक श्री विज्ञान सागर जी महाराज ने कहा अरे गुनौर में क्या हुआ जानते हो? उन्होंने बताया लगभग 5 जनवरी, 1991 को कुंडलपुर से संघ का विहार गुनौर के लिए हुआ। संघ में तब मुनि विराग सागर, मुनि अजित सागर, मुनि निर्णय सागर (गुरुवर श्री), क्षु. कुंदकुंद सागर, क्षु. यशोधर सागर जी थे और साथ में बा. ब्र. हरिशचंद्र भैया (ऐ. विज्ञान सागर) थे। गुरु जी छोटे महाराज जी के नाम से जाने जाते थे। 24 वर्ष की छोटी आयु थी जब गुरु जी के पैर में फोड़ा हुआ। वह फोड़ा अंदर ही अंदर पक रहा था। वेदना इतनी की उसे छुआ भी नहीं जाता। ऐसे भयंकर दर्द में भी निरंतर विहार चलता रहा। उस दशा को देख लोगों के मुख से तो आह निकलती थी किन्तु उन छोटे महाराज के मुख से कभी आह न निकली। पूरा संघ गुनौर पहुँचा। डॉ. को बुलाया गया उस स्थान को शून्य किए बिना ही उस फोड़े को फोड़ा गया उस फोड़े में से लगभग 1 लोटा पस निकला। लगभग 2.5 इंच गड्ढा हो गया। कपड़े की पट्टी पर मलहम लगा उसे भरा गया। टाट की पट्टी बांध गुरुवर आहार चर्या के लिए निकलते थे। आज भी वह निशान गुरुवर श्री के पैर पर दृष्टिगोचर होता है।

फोड़े की यह वेदना देख वेदना भी वेदना भूल गई। ऐसी वेदना में भी विहार आहार आदि सभी चर्या। धन्य हैं ऐसे मुनिवर जो विभिन्न कष्टों को सहते हुए भी साधनारत् रहते हैं।

''बरसाती रात''

बहुत तेज बारिश हो रही थी। तेज हवा के कारण बारिश का पानी खिड़कियों से अंदर आ रहा था। पूज्य गुरुवर सहित पूरा संघ वहाँ विराजमान था। उस समय हम भी वहाँ थे। ऐलक जी महाराज गुरु जी से बोले ''महाराज जी! आपको याद है वो बरसाती रात।'' यह सुनकर गुरु जी मुस्कुरा गए। हमने जिज्ञासावश पूछा ऐलक जी महाराज आप कब की बात कर रहे हैं? तब उन्होंने बताया 1991 की बात है महाराज जी (मुनि निर्णय सागर) हम यानि क्षु. विज्ञान सागर जी, अन्य साधु एवं बा. ब्र. संदीप भैया (क्षु. विशंक सागर) साथ में थे। पन्ना की वाचना के पश्चात् लक्ष्मीपुर, इटवाँ होते हुए सिंहपुर पहुँचे। श्री अजित सागर जी की वह जन्मभूमि है वहाँ एक, दो दिन रुके। पुनः विहार किया।

आषाढ़ का महिना था। रास्ते में रुकने का कहीं कोई स्थान नहीं था। एक खेत जो जुता हुआ था, काली चिकनी मिट्टी फैली हुई थी, रात्रि विश्राम का वही स्थान बना। दो तखत मंगाये। अचानक से बहुत तेज बारिश हुई। आधे घंटे में ही पानी घुटनों तक भर गया। पैर भी अंदर धँसने लगे। दो पाटों पर सभी लोग बैठ गये। सिंहपुरी के श्रावक तिरपाल भी लाए किंतु चारों ओर खेत खुला व भयंकर बारिश होने से वह भी इतना कार्यकारी नहीं था। पूरी रात तूफानी हवा चलती रही, बारिश थमी नहीं और बैठकर ही रात गुजारी।

प्रातः काल श्रावकों ने कहा महाराज जी क्षमा करना आज तो आपको बहुत कष्ट सहना पड़ा। तब उन्होंने कहा नहीं आज की रात्रि तो बहुत सुखद व्यतीत हुई। आज तो हमें कर्म क्षय का निमित्त मिल गया।

वास्तव में यह दिगंबर साधुओं की साधना ही हो सकती है। तीर के समान वायु, जल की बूँदों को रातभर सहन करने पर भी स्वभाव में शांति और देह में कांति।

''ज्योतिष विद्या के धनी''

मई 2016 में मुनि शिवानंद जी एवं मुनि प्रशमानंद जी का जयपुर के लिए विहार चल रहा था। जयपुर के पास पहुँचकर उन्हें समाचार मिला कि खानिया जी में श्री पुष्पेन्द्र राणा के पिता जी की समाधि चल रही है। गणिनी आर्यिका श्री गौरवमती माता जी वहाँ ससंघ विराजमान थीं। मुनि श्री ने गुरु जी के पास संदेश भिजवाया और संपूर्ण जानकारी देते हुए पुछवाया कि यदि हम चूलगिरी-खानिया जी पहुँचें तो क्या सार्थकता रहेगी? गुरु जी ने तात्कालिक कुंडली बनवायी और देखकर कहा चिंता मत करो आराम से पहुँच जाओ। दोनों मुनिराज खानिया जी पहुँचे, संबोधनादि भी दिया। आगे के कार्यक्रम देखने थे अतः मुनिराजों ने पूज्य गुरुदेव से पुनः पुछवाया अब इनका आयुकर्म कैसा है? वैसे स्वास्थ्य तो ठीक लग रहा है। गुरु जी ने कहा कि ये 24 घंटे भी चल जाएँ तो बहुत बड़ी बात है ये कल का सूरज नहीं देख पाएँगे। मुनिराज पुनः समाधि कक्ष में पहुँचे। माता जी को भी यह बताया। माता जी ने कहा अरे नहीं, अभी तो ये पूर्ण स्वस्थ हैं। अचानक ही शाम 4.00 बजे के आस पास स्वास्थ्य बिगडा और उनकी समाधि हो गयी।

मुनि शिवानंद जी महाराज ने बताया कि उसी दौरान एक समाधि का प्रकरण और आया। गुरु की आज्ञा व निर्देशन हेतु गुरु जी के पास समाचार पहुँचवाया कि इस व्यक्ति के संदर्भ में क्या व कैसे करना है। गुरु जी ने तात्कालिक कुंडली बनवायी और देखकर कहा कि ये व्यक्ति या तो चले गए या कुछ ही क्षणों में जाने वाले हैं। मुनिराज अपने कक्ष से बाहर निकले ही थे कि

सामने से एक व्यक्ति आता दिखाई दिया और बोला महाराज जी! अब वे इस दुनिया में नहीं रहे।

गुरुवर श्री के संबंध में ऐसे एक नहीं अनेक उदाहरण हैं।

ज्योतिष का प्रकाण्ड ज्ञान रखने वाले गुरुवर श्री की यह मुख्य विशेषता है कि वे दीक्षा या समाधि के अवसर पर अपने इस ज्ञान का उपयोग करते हैं। लोक में कहा जाता है कि ज्ञान को पचाना अत्यंत कठिन है किन्तु हमें स्वयं गृहत्याग के लगभग तीन साल बाद ज्ञात हुआ कि गुरु जी को ज्योतिष का इतना गहन अध्ययन है, ज्ञान है।

''हे गुरुदेव प्रणाम आपके चरणों में''

गुरुओं के आशीर्वाद में असीमित शक्ति होती है इसका अनुभव स्वयं हमने भी किया है। जैसे कोई गाड़ी गड्ढे में फंस जाये तो उसे एक धक्के की आवश्यकता होती है उसी प्रकार साधुओं का आशीर्वाद काम करता है। पुद्गल, पुद्गल को प्रभावित करता है। जैसे सिर दर्द में गोली खाने पर दर्द ठीक हो जाता है वैसे ही कर्म भी पुद्गल है और आशीर्वाद भी। अतः आशीर्वाद से कर्म प्रभावित होते हैं।

यूँ तो अनेक श्रद्धालु हैं जिन्होंने गुरु आशीर्वाद का प्रत्यक्ष फल देखा। संभव है आपका भी अपना अनुभव हो। मुनि श्री ज्ञानानंद जी महाराज ने बताया कि 2007 मथुरा में जब वे ब्रह्मचारी अवस्था में थे तब रात में 10:30 बजे बम्बई से श्री सुरेन्द्र कुमार जी एवं श्रीमती संगीता जी का फोन आया और घबराते हुए कहने लगे पंडित जी हमारे बेटे का स्वास्थ्य बहुत खराब है। डॉक्टर्स भी कुछ ढंग से नहीं कह रहे। उन्होंने गुरु जी को सारी बात बतायी। पुनः गुरु जी के मौन में दिये गए संकेतों को समझकर उन्होंने सुरेंद्र भैया से कहा कि घबराओ मत, गुरु जी ने कहा है कि एक नारियल उस पर से 9 बार उतारकर अलग रख दो।

5-10 मिनट बाद उनका फिर फोन आया बोले पंडित जी नारियल तो फट गया। गुरु जी से पूछा तो उन्होंने कहा दूसरा उतार दो। उन्होंने ऐसा ही किया फिर 5 मिनट बाद फोन आया महाराज जी से कहा वह भी फट गया। गुरु जी ने कहा तीसरा उतार दें। पुनः तीसरा नारियल उतारने के पश्चात् स्वास्थ्य में थोड़ा अंतर दिखा और वह पूर्णतया स्वस्थ हुआ।

कुछ महीनों पश्चात् श्री सुरेन्द्र जी का पंडित जी के पास फोन आया और बताया पंडित जी एक आश्चर्यजनक बात हुई है। हमारे पूजागृह में आग लग गयी सब कुछ जलकर राख हो गया किन्तु गुरुदेव की तस्वीर वैसी की वैसी ही है।

''कल्पवृक्ष की छाँव''

पूज्य गुरुदेव का 2010 का चातुर्मास श्री जंबूस्वामी तपोस्थली, बौलखेड़ा में चल रहा था। वन्य क्षेत्र के समान वहाँ जीवों की बहुलता थी। चीटें, गिजाई विभिन्न प्रकार के कीट जमीन पर विचरण करते थे। रात्रि के लगभग 12.00 बजे थे। शुभाशीष भैया उठकर बैठ गए। पूज्य गुरुदेव ने देखा तो उनसे अपनी मौन भाषा में पूछा क्या हुआ, ऐसे क्यों बैठे हो? भैया ने कहा गुरु जी बहुत कीड़े काट रहे हैं, नींद नहीं आ रही। गुरु जी ने ब्र. भैया के मना करने पर भी वात्सल्यपूर्वक उन्हें अपने ही पाटे पर सुला लिया।

पूज्य गुरुदेव के वात्सल्योदधि में अवगाहन करने वालों ने जिस शीतलता का अनुभव किया वह वचनों के अगोचर ही है। मुनि श्री प्रज्ञानंद जी महाराज जी ने एक नहीं पूज्य गुरुवर के वात्सल्य संबंधी अनेक घटनाएँ सुनायीं। उन्होंने बताया सन् 2011 में जब पूज्य गुरुवर का चातुर्मास हस्तिनापुर में चल रहा था उस समय उनका अर्थात् बा.ब्र. शुभाशीष भैया का स्वास्थ्य प्रतिकूल था उन्हें बुखार था। बुखार के कारण नींद नहीं आ रही थी। गुरुवर श्री ने उनकी यह स्थिति देखी तो जमीन पर ही उनके पास जाकर बैठ गए और उनका सिर अपनी गोद में रख लिया। गुरुवर श्री वात्सल्यपूर्वक सिर सहलाने लगे, भैया को नींद आ गई। पता नहीं पूज्य गुरुदेव कब तक इस प्रकार बैठे रहे।

माता-पिता से बढ़कर स्नेह-प्रेम, वात्सल्य गुरुवर श्री में परिलक्षित होता है। हमने 2009 में स्वयं भी देखा है। पूज्य गुरुदेव संघ सहित महावीर जयंती भवन मेरठ में विराजमान थे। दिन के लगभग 2:30 बजे थे। कक्षा का समय था। अचानक शुभाशीष

भैया के सीने में बहुत तेज दर्द हुआ। गुरु जी ने उन्हें कुछ सहलाया तब भी ठीक नहीं हुआ तो गुरु जी ने उनके पैरों की अंगुलियों को थोड़ा खींचा। भैया जी मना कर रहे थे नहीं गुरु जी आप नहीं उनकी आँखों में आँसू थे और गुरु जी एक पिता के समान उनकी वेदना को दूर करने का प्रयास कर रहे थे।

गुरु जी का ऐसा वात्सल्य सदैव परिलक्षित होता है जो एक माता-पिता की भाँति शिष्यों के प्रति रहता है। पूज्य गुरुदेव का वात्सल्य आकाश के समान नि:सीम है।

चुनी राह स्वयं पथरीली दी खुशियाँ बेदाम।
शिष्य-भक्तगणों को तुम ही, कल्पवृक्ष की छाँव॥

''स्वाध्याय प्रेमी''

पूज्य गुरुदेव का सान्निध्य क्षणभर का ही क्यों न प्राप्त हो किन्तु कोई न कोई नूतन प्रेरणा उनसे जरूर प्राप्त होती है। कंकरखेड़ा मेरठ में संघ का एक दिन का प्रवास था। संभवतः गुरुवर श्री की ज्ञान पिपासा ने ही उन्हें ज्ञान का महासागर बना दिया। कभी उनकी कृशकाया को देखकर भक्तों के मुख से अनायास निकल भी पड़ा कि गुरु जी आप तो बहुत कमजोर हो रहे हैं तो गुरु जी का मधुर मुस्कान के साथ यह कहना कि ''देह से क्या प्रभाव पड़ता है, मैं आत्मा का ध्यान रखता हूँ और ज्ञानामृत के द्वारा उसी को पुष्ट करने का प्रयास करता हूँ।'' भक्तों को कुछ क्षण सोचने पर मजबूर कर देता है।

दोपहर का समय था। गुरुजी, क्षु. दिव्य सागर जी (ज्ञानानन्द महाराज जी) शुभाशीष भैया और हम मंदिर जी पहुँचे। गुरु जी ने क्रमशः शास्त्रों की अलमारी को देखा। शताधिक शास्त्रादि अलमारी में थे। गुरु जी शास्त्रों को, पुस्तकों को देखते जा रहे थे और कह रहे थे ये भी पढ़ा है, ये भी पढ़ा है। ऐसा करते करते अलमारियाँ खाली हो गईं, मुश्किल से 2-3 पुस्तकें उन्होंने रखीं जो पढ़ी हुई नहीं थी। यह सब हम चुपचाप खड़े देख रहे थे और हतप्रभ भी थे कि गुरु जी ने कितने शास्त्रों का अध्ययन किया है। यह सब देख हम सोच रहे थे काश इतना अध्ययन हम भी करें।

स्वाध्याय की प्रेरणा, पठन-पाठन की प्रेरणा हमें पूज्य गुरुदेव से ही प्राप्त हुई है। स्वाध्याय के प्रति उनके उत्साह को देखकर हमारा भी उत्साह शास्त्रादि के अध्ययन हेतु वृद्धिंगत होता है।

''करुणा के सागर''

पूज्य गुरुदेव में दया, करुणा इस प्रकार व्याप्त है जिस प्रकार घी में चिकनाई। किसी की वेदना, दुख, पीड़ा गुरुवर श्री के नेत्रों में स्पष्टतया दृष्टिगोचर होती है। अर्थात् छोटे बालक के रुदन से भी उनका हृदय आर्द्र हो जाता है। गुरुवर श्री के बचपन की एक घटना कर्णगोचर होती है। जब वे छोटे थे तब पिता जी ने एक बार समझाया बेटा! पेड़-पौधों में जीवन होता है, इन्हें भी कष्ट होता है, ये भी सुख-दुख का अनुभव करते हैं। पिता जी की यह बात भोले, निश्छल बालक दिनेश (गुरुवर श्री) के हृदयंगम हो गयीं। एक समय घर में चारा काटने की मशीन रखी हुई थी उससे चारा काटा जा रहा था। उसे दिनेश ने बहुत गौर से देखा। बाद में विचार किया कि जब पेड़ पौधों में जीवन होता है तो उन्हें कितना कष्ट होता होगा। यह देखने के लिए चुपचाप से जाकर उस मशीन में अंगुली दे दी और उससे रक्त की धार बह चली। आज भी कटे का वह निशान उनकी अंगुली पर है।

बचपन से ही ऐसा करुण चित्त कि स्कूल जाने से पूर्व पेड़ पर पक्षियों के लिए दाना व पानी टांगकर जाते थे व स्कूल से आकर के पुनः यही कार्य करते थे। इतनी संवेदना इतनी करुणा आज भी इस महान व्यक्तित्व में परिलक्षित होती है। 2014 में गुरु जी ससंघ मदार अजमेर में विराजमान थे। नवंबर का समय था। तेज ठंडी पड़ रही थी। जहाँ गुरु जी रुके थे वहाँ चिड़ियों का आना जाना था। लोगों ने कहा अरे इन्हें बाहर कर दो। चीं-चीं करके शोर मचा रही थीं। गुरु जी ने तभी कहा ''अरे रहने दो, इनके कहीं फ्लैट थोड़े ही ना हैं, ये ठण्डी में कहाँ जाऐंगी।''

प्राणीमात्र के प्रति उनकी यह करुणा अनुपम है। श्रोताओं ने अनुभव किया होगा कि प्रवचन कथानक आदि सुनाते समय यदि कोई मार्मिक, संवेदनशील बात आती है तो उनका कंठ अवरुद्ध तक हो जाता है। एक समय पूज्य गुरुवर श्री का जब स्वास्थ्य अत्यंत प्रतिकूल था तब भक्तों की आँखों से अश्रुपात होने लगे। स्वास्थ्य इतना प्रतिकूल कि अगले ही क्षण क्या हो कुछ नहीं कहा जा सकता। ऐसे समय में भी उनकी करुणा का अंदाजा स्वयं लगाया जा सकता है जब दुखी चेहरों अश्रुओं को देख उनके द्वारा पंक्तियाँ लिपिबद्ध होती हैं-

अपने दुख से नहीं दुःखी मैं, मैं पीड़ित पर पीर से।
मैंने अपनी कही भावना, वर्द्धमान महावीर से॥

''धन्य मुनिराज हमारे हैं''

गुरुवर श्री का सन् 2000 का चातुर्मास टूण्डला में बड़ी भक्ति, श्रद्धा व जिन धर्म की अतिशयपूर्ण प्रभावना सहित चल रहा था। बालक से लेकर वृद्ध तक सभी ज्ञान व संयम की पवित्र मंदाकिनी में अवगाहन कर कर्म मलों का प्रक्षालन करने हेतु आतुर थे। टूण्डला निवासियों को गुरुवर श्री का सान्निध्य पाकर ऐसा लगा मानो हनुमान को राम का सुखद आश्रय प्राप्त हुआ हो। उस समय वैय्यावृत्ति का नजारा भी दृष्टव्य था। ढोलक मंझीरों आदि के साथ भजन गाते हुए युवावर्ग अपनी ऊर्जा को वृद्धिंगत करता। उसे देख ऐसा लगता था मानो कोई महोत्सव ही चल रहा हो। उसी समय टूण्डला निवासी श्री पंकज (नीटू) भैया का स्वास्थ्य अचानक खराब हो गया। उनके पेट में बहुत तेज दर्द उठा, जाँच कराने पर पता चला कि उन्हें पथरी है।

उन्होंने क्षुल्लक श्री विशंक सागर जी महाराज से कहा ''महाराज जी मैं पथरी के कारण बहुत परेशान हूँ, आखिर क्या करुँ?'' क्षुल्लक जी ने कहा ''गुरु जी की अंजुलि का कुछ भी प्राप्त हो जाए तो उसे खा लेना तुम्हारा रोग मिट जाएगा। और कुछ न मिल पाए तो अंत में जब वे पानी पीते हैं तो नीचे चुपके से कटोरी लगाकर उसे भर लेना।'' नीटू भैया ने ऐसा ही किया, सौभाग्य से गुरुवर श्री की अंजुलि का प्रसाद रूप भोज्य पदार्थ उन्हें प्राप्त हुआ। उन्होंने उसे खाया। उसके पश्चात् उनके न तो पथरी का दर्द हुआ न कभी पथरी हुई। गुरु चरण चंचरीक पंकज भैया वर्तमान में मुनि पवित्रानंद के रूप में संघ में साधनारत हैं।

''करते हैं असंभव को संभव''

गुरुवर श्री के विहार के विषय में लोग कहते हैं कि आचार्य श्री का विहार तो एकदम राजधानी एक्सप्रेस है। न सर्दी, न गर्मी, न बरसात किसी भी ऋतु से प्रभावित नहीं होते। एक बार मन में ठान लिया तो उसे कोई परिवर्तित नहीं करा सकता। कई विहार हमें याद हैं जहाँ दूरी अधिक हो और पहुँचने का समय कम हो किन्तु जेठ की गर्मी में भी गुरुवर श्री 25-30 कि.मी. चल अपने गन्तव्य तक पहुँचे जबकि श्रावकगण भी चिंतित थे कि ऐसी भयंकर गर्मी में विहार कैसे होगा।

सन् 2013 के चातुर्मास की घोषणा श्री जंबूस्वामी तपोस्थली हो चुकी थी। अप्रैल का महीना था। गुरु जी ने कहा क्यों न अब की बार ग्रीष्मकालीन वाचना शिमला की जाये। उस समय गुरु जी दिल्ली में थे। सबने कहा महाराज जी ये तो असंभव है। यहाँ दिल्ली से शिमला लगभग 343 कि.मी. है। भयंकर आग बरस रही है। ऐसे में जाना और लौटकर आना संभव नहीं है। किन्तु होना वही था जिसका निर्णय गुरुवर श्री ले चुके थे। आखिर 30 अप्रैल को मॉडल टाउन, दिल्ली से गुरु जी का विहार शिमला के लिए हुआ। 20 मई के लगभग गुरुवर श्री का प्रवेश शिमला में हुआ 12-13 जून तक गुरु जी ससंघ यहाँ ठहरे। वाचना हुई, ऐलक दीक्षाएँ हुईं पंचकल्याणक हुआ। पुनः गुरु जी का विहार ससंघ दिल्ली की ओर हुआ। 6-7 जुलाई को गुरु जी दिल्ली लौटकर आ गए। और वहाँ से 15-16 तारीख में बौलखेड़ा पहुँचकर चातुर्मास किया।

गुरुवर श्री की यह यात्रा वास्तव में सभी को अचंभित करने वाली थी। ऐसे कई विहार गुरुवर श्री ने किए। कई बार लोग कहते हैं कि महाराज जी तो 1000 कि.मी. भी सोचते नहीं और ऐसे चल देते हैं जैसे घर आँगन ही नाप रहे हैं।

''नान्यथा वादिनो मुनिः''

गुरुओं के मुख से निकली हाँ या ना रहस्यपूर्ण होती है। सहजता से मुखरित हुई हाँ या ना भी बड़ी प्रभावी होती है। उनकी वाणी में तप का विशेष प्रभाव परिलक्षित होता है। जनवरी 2011 में गुरु जी ससंघ शौरीपुर बटेश्वर में विराजमान थे। मनिया से श्री रिखब चंद जी के पुत्र मनीष व श्री जवाहर लाल जी के पौत्र उनका भी नाम मनीष ही था, गुरुवर श्री के दर्शनार्थ बाइक पर आये। संध्याकालीन बेला में दोनों ने गुरुवर श्री से वापिस जाने की आज्ञा ली। कई लोग आशीर्वाद लेकर निकल रहे थे सबको गुरु जी ने आशीर्वाद दिया। इनकी बारी आई तो गुरुजी ने कहा आज नहीं, कल निकल जाना। दोनों बोले गुरु जी एक सवा घंटे का रास्ता है, आराम से पहुँच जाऐंगे। गुरु जी ने कहा देख लो रुक जाओ। वे बोले नहीं, हम चले जाऐंगे। वे लगभग 3 कि.मी. पहुँचे होंगे और उनका भयानक एक्सीडेंट हो गया। किन्तु गुरु की इतनी कृपा थी कि दोनों में से किसी को कुछ भी नहीं हुआ। वे पैदल-पैदल लौटकर गुरु जी के पास आए और क्षमा माँगते हुए बोले गुरु जी हमें आपकी बात मान लेनी चाहिये थी।

ऐसी घटना एक नहीं बहुत हैं जो हमने स्वयं देखी भी हैं और कुछ का अनुभव भी किया है।

''परम उपकारी गुरुदेव''

हमारा 2016 का चातुर्मास थड़ी मार्केट, मानसरोवर जयपुर में चल रहा था। आर्यिका श्रेयनंदनी माता जी को तेज ज्वर हो गया। 2 अक्टूबर के दिन जयपुर से दो बस पूज्य गुरुवर के जन्म व दीक्षा दिवस के अवसर पर श्री जंबूस्वामी तपोस्थली गुरु चरणों में पहुँची। उसी दिन मध्याह्न में लगभग 4.00 बजे पता चला कि माता जी को डेंगू है और उनकी ब्लड प्लेट्लेट्स 24000 हैं। मंदिर अध्यक्ष श्री गजेन्द्र जी भी उस समय जंबूस्वामी तपोस्थली थे, सूचना प्राप्त होते ही वे भी वहाँ से तुरंत चले। श्रावकों का आवागमन शुरु हुआ और देव-शास्त्र गुरु के प्रति समर्पित सभी लोगों ने मंदिर जी में महामंत्र का जाप शुरु किया। कुछ श्रावक आये और बोले माता जी डॉक्टर्स का कहना है कि इन्हें अभी इसी समय एडमिट करना होगा अन्यथा कुछ भी हो सकता है। हमने कहा ये तो असंभव है। किन्तु इन सब बातों से घबराहट तो थी ही। वैद्य जी ने कहा रात आप निकाल लें, कैसे भी हो बुखार कम करें। सुबह आहार के समय हम औषधि दे सकते हैं। रात्रि भर समाज के लोग वहीं रहे।

सभी लोग चिंतित थे। गुरु जी का आशीर्वाद आया और उन्होंने कहलवाया कि ''बेटा चिंता मत करना। अब प्लेटलेट्स गिरेंगी नहीं और बुखार भी बस अभी उतर जायेगा।'' गुरु जी का आशीर्वाद स्वरूप गोला लेकर भक्तगण एवं ब्र. प्रमेया दीदी रात्रि में लगभग 11.00 बजे आये। जो बुखार कैसे भी नहीं उतर रहा था गुरु जी के आशीर्वाद से वह तुरंत 99°C तक आ गया और सुबह तक उनकी प्लेटलेट्स 1 लाख 63 हजार तक आ गयीं। डॉक्टर

भी आश्चर्यचकित था कि बिना औषधि लिए इतनी तीव्र गति से सुधार हमने तो कभी नहीं देखा बल्कि औषधि का भी इतना शीघ्र असर नहीं होता। जब हमने गुरु जी के पास भैया जी के माध्यम से सूचना पहुँचवाई कि अब स्वास्थ्य में सुधार है तब भैया जी ने बताया कि गुरु जी देर रात्रि तक जाप करते रहे।

जिस प्रकार सिर पर छत हो तो तेज बारिश से कोई अंतर नहीं पड़ता उसी प्रकार गुरु के रहते कोई भी मुसीबत ठहर नहीं सकती। वास्तव में गुरु का आशीष वह कल्पवृक्ष है जो प्राणियों को मनोनुकूल वस्तुएँ व सघन छाँव प्रदान करता है।

''अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी''

आज की भोगवादी, संग्रहवादी, प्रदर्शनवादी, तृष्णार्त, पदार्थाकांक्षी, संहाराभिमुख सभ्यता के सम्मुख आचार्य गुरुवर श्री एक जीते-जागते प्रश्नचिह्न हैं। वे संसारी मनुष्यों के समक्ष मानवता एवं आत्मता के जाज्वल्य प्रतीक हैं। गुरुवर श्री ज्ञान के महासागर हैं, उनका व्यक्तित्व व कृतित्व दोनों ही अद्भुत हैं, उनकी मौलिक कृतियों में जैन अध्यात्म से लेकर जैन व्यवहार, जैनाचार, इतिहास, कला, संस्कृति, साहित्य आदि सभी विषयों का समावेश है। इनकी तर्क व युक्ति किसी भी शंका का निरासन बहुत सरलता से कर देती है। माध्याह्निक स्वाध्याय में जब हम शंकाओं का सटीक आगमानुकूल समाधान सुनते हैं तो कई बार हतप्रभ रह जाते हैं कि जो विषय हमने हाल ही में पढ़ा है हम उसको भी भूल जाते हैं किन्तु आश्चर्य है 10-15 वर्ष पूर्व पठित विषय को भी गुरुवर श्री सहजता से समझा देते हैं। और इसी अद्भुत ज्ञान के कारण विद्वानों की अग्रिम पंक्ति भी इनके चरणों में विनयावनत है।

कहीं से भी लोग आएँ और कैसी भी शंका लाएँ वे कहते हैं महाराज जी आपके पास तो हर शंका का समाधान ऐसे हो जाता है जैसे समवशरण में पहुँचकर के प्रत्येक प्रश्न का उत्तर मिल जाता है। 2005 की मेरठ की बात है। श्री पार्श्वनाथ मंदिर सदर में नीचे श्री महावीर स्वामी की वेदी में स्वाध्याय चल रहा था। श्री रतन लाल जी, श्री कस्तूर चंद जी आदि विद्वान स्वाध्याय प्रेमी बैठे हुए थे। स्वाध्याय के मध्य कोई शंका आयी तब वे कहने लगे अरे किसी शंका का समाधान चाहिए हो तो उपाध्याय निर्णय सागर जी के पास जाओ। प्रत्येक शंका का समाधान मिल जायेगा।

तब तो मात्र सुना था किन्तु आज सौभाग्य है कि उनकी छत्रछाया प्राप्त कर रहे हैं। धन्य है ज्ञान का यह अनुपम मूर्त रूप, जिनका प्रत्येक समय ज्ञान के चिंतन, मनन, लेखन में ही व्यतीत होता है और अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी ये संत प्रतिपल शास्त्रों के अध्ययन-अध्यापन में रत रहते हैं। वर्तमान काल को देखते हुए जिन्होंने जो ग्रंथ प्रकाश में नहीं थे उन ग्रंथों को पुनः प्रकाशित करवाकर जैन साहित्य जगत को अमूल्य उपहार प्रदान किया।

''दृष्टि की व्यापकता''

आचार्य गुरुवर कर्तृत्व-संपन्न हैं। वे प्रतिक्षण सक्रिय हैं। उनका वात्सल्य उदार निश्छल और सहज व्यक्तित्व सभी को आत्मीयता के पाश में बांध लेता है। साधु बड़ा आए या छोटा सभी को दूर तक लेने जाना और सभी को थोड़ी दूरी तक छोड़ने जाना, यहाँ तक कि अपने शिष्यों के प्रति भी यही व्यवहार रहता है। एक बार गुरु जी से किसी ने कह दिया-महाराज जी! आप तो बहुत बड़े हैं फिर आप इतनी दूर लेने और छोड़ने क्यों जाते हैं। तब गुरु जी ने सहज मुस्कुराते हुए कहा अरे मैं छोटा-बड़ा नहीं देखता मैं तो दिगंबर मुद्रा, जिन मुद्रा का सम्मान करता हूँ।

इस बात को सुनकर हमारा हृदय गद्गद् हो गया और गुरुवर श्री की दृष्टि की व्यापकता को विचार करने लगा। अनुभव किया कि आज के युग में समन्वयवादी विशाल दृष्टिकोण वाले आचार्यों की ही आवश्यकता है जो समाज में एकता के वातावरण का निर्माण कर सकें।

''दिव्य साधक''

मुनि व आचार्य अनेक हैं परन्तु ऐसे मुनि व आचार्य विरले होते हैं जो जीवन निर्माण का नव इतिहास गढ़ देते हैं। ऐसी ही विरल-विभूतियों में हैं-आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज। इनके जीवन में साधना व सृजन का मणिकांचन योग है। जहाँ ये ज्ञान की अभिनव मूर्ति हैं वही त्याग-तपस्या का शिखर भी। मधुमेह जैसे रोग से ग्रसित होने के बावजूद भी इनके तप में कोई अंतर नहीं आया। जहाँ मेडिकल साइंस कहती हैं कि डाइबिटिक भूखा नहीं रह सकता वहीं पूज्य गुरुदेव की सहज साधना ही विज्ञान के लिए एक चुनौती है। उसमें भी गुरुवर श्री के व्रत-उपवास जो सदैव चलते ही रहते हैं, उनका तो कहना ही क्या। शौरीपुर में गुरु जी ने कवल चंद्रायण के दुर्द्धर व्रत किए और परिणाम यह निकला था कि उस समय उनकी डायबिटीज ठीक हो गयी थी। कभी चातुर्मास में एक आहार एक उपवास करना, कहीं विभिन्न प्रकार के व्रत। नमन है ऐसी साधना व साधक को।

''जिनशासन के स्तंभ''

जिनशासन को लंबे समय तक जीवंत रखने के प्रयास में सदैव प्रयत्नशील गुरुवर बिना रुके अपने कार्य को गति प्रदान करते हैं। गुरु जी सदैव कहते हैं कि जिन शासन रूपी वृक्ष के नीचे आश्रय पा रहे हम इस वृक्ष को सींचते रहें जिससे जो निधि हमें हमारे पूर्वाचार्यों से प्राप्त हुई वह अमूल्य धरोहर आने वाली पीढ़ियों को भी प्राप्त हो। कभी तो हम गुरु जी के विचार सुनते हैं, योजनाएँ और उसके पीछे कारण सुनते हैं तो सोचते हैं कि जहाँ पर अपनी सोच समाप्त होती है वहाँ से उनकी सोच प्रारंभ होती है। देशभक्त का जो जुनून अपनी धरती माँ के लिए होता है, पूज्य गुरुदेव का वही समर्पण हमने जिनशासन के प्रति देखा है। कभी ताम्रपत्रों पर शास्त्रों का लेखन कराना, कभी उत्तुंग प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा तीर्थों का जीर्णोद्धार आदि कराने में संलग्न रहते हैं।

गुरुवर श्री का 2014 का चातुर्मास अजमेर था। श्री जिन शासन तीर्थक्षेत्र के निर्माण की बात आयी। किन्तु कुछ लोग इसके विरोध में थे जो चाहते थे कि इस क्षेत्र का निर्माण न हो। गुरु जी ने समझाया कि जिनधर्म की जिनशासन की संस्कृति व सभ्यता का संरक्षण व संवर्द्धन इन्हीं सबसे होगा। किन्तु कुछ लोग जितना विरोध कर सकते थे किया और अधिकतर लोग गुरु जी से प्रार्थना कर रहे थे-गुरु जी बहुत सालों से जो अतिशय नहीं हुआ वह आप कर दो, इस क्षेत्र का निर्माण करा दो। इस बीच कभी पंचायत, कभी मीटिंग कुछ गंभीर माहौल भी बना। हमें तो लग रहा था पता नहीं क्या होगा? हमने गुरु जी से पूछा गुरु जी! क्या सब कुछ ठीक होगा?

गुरु जी ने कहा–नि:स्वार्थ भावना के साथ जो भी करो एवं उद्देश्य पवित्र व सम्यक् हो तथा उसको प्राप्त करने के साधन सम्यक् हों तो कार्य जरूर पूर्ण होता है।

और आश्चर्य तो तब हुआ जब श्री जिनशासन तीर्थक्षेत्र पर 13 दिन में शिलान्यास से लेकर प्रतिमा स्थापित होने तक लाल मंदिर बनकर के तैयार हो गया। जहाँ अतिशयकारी श्री शांतिनाथ भगवान की रत्नमयी मूलनायक प्रतिमा है। इन्हीं श्री शांतिनाथ भगवान की प्रतिमा आने के 7 दिन पूर्व से प्रतिदिन स्वप्न आता था कि स्वर्ग से विमान में स्फटिकमयी श्री शांतिनाथ भगवान की प्रतिमा आ रही है। यह स्वप्न गुरु जी को हमें व संघ के अन्य साधुओं को भी दिखा। आज वहाँ पर सवा ग्यारह फीट की पद्मासन चौबीसी व उत्तुंग खड़गासन प्रतिमा का निर्माण चल रहा है।

हम नमोस्तु निवेदित करते हैं उन आचार्यों को जिन्होंने जिन शासन के लिए उसकी संस्कृति व सभ्यता के संवर्द्धन के लिए कठिन परिश्रम किया।

''आत्मवत् सर्वभूतेषु''

'आत्मवत् सर्वभूतेषु' को जीने वाले महान संत जिन्होंने जीवन का क्षण-क्षण आत्मकल्याण व जनहित के लिए लगाया। वे उच्च विचारक, संगठन के हिमायती एवं समन्वयवादी संत हैं। प्रत्येक साधु साध्वी, त्यागी-व्रतियों के प्रति उनके हृदय में वात्सल्य का अमृत निर्झर प्रवाहित होता है। अपने संघ के प्रत्येक साधु संत, त्यागी-व्रती के लिए वे सदैव कहते हैं मेरे संघ का प्रत्येक साधक वसुनंदी ही है। और अन्य प्रत्येक संघ के साधकों के प्रति जो उनका स्नेह है वह अद्भुत ही है। गुरु जी के दर्शन कर अनेक साधकों को हमने कहते सुना है ''महाराज जी यह आपका वात्सल्य ही है जो हमें आप तक खींच लाता है।'' साधु छोटे हों या बड़े किन्तु गुरुवर श्री सबसे मिलते जरूर हैं। वे कहते हैं संपूर्ण श्रमण जगत मेरा परिवार है। हम एक वृक्ष की विभिन्न शाखाएँ हैं। जयपुर 2015 के चातुर्मास के दौरान जब गुरुवर श्री सभी मंदिरों के दर्शनार्थ पहुँचे, सभी साधकों से मिले तब उस हृदयस्पर्शी मिलन को देख कि एक आचार्य परिवार के मुखिया के समान सभी साधकों को एक सूत्र में बांध रहे हैं, सभी की आँखें नम हो गयीं।

2014 में अजमेर के लिए विहार चल रहा था। मई-जून की भयंकर गर्मी में मानो बरसती आग में चले जा रहे थे। धारुहेड़ा के बाद संघ प्रात:काल अष्टापद पहुँचा। सुबह-शाम का लगातार विहार चल रहा था। वहाँ आर्यिका स्याद्वादमती माता जी ससंघ ठहरी हुई थीं। उनका स्वास्थ्य अत्यंत प्रतिकूल था। सभी साधुवर्ग का कंठ प्यास से सूख रहा था। 8.30-9.00 बजे शुद्धि का पानी भी आ गया किन्तु गुरु जी ने कहा देखो माता जी

का स्वास्थ्य अत्यंत प्रतिकूल है। पहले मैं उन्हें आहार कराऊँगा पुनः स्वयं आहार को उठूँगा। और मेरी आज्ञा है बाकि साधुओं को आहार के लिए उठा दिया जाए। ऐसा ही हुआ गुरुवर श्री ने जिस स्नेह और वात्सल्य से माता जी का आहार कराया वह दृष्टव्य था। उस दिन गुरु जी स्वयं लगभग 11.00 बजे चर्या के लिए उठे।

ईर्यापथ प्रतिक्रमण के समय जब सभी साधु बैठे हुए थे तब उन्होंने कहा महाराज जी! आज आपने हमें पहले उठा दिया और आप तो बहुत लेट हो गए।

गुरु जी ने कहा देखो "साधु-साधु के काम नहीं आएगा तो कौन आएगा। मात्र साधु ही साधु की स्थिति व परिस्थिति समझ सकता है।" उनके वे शब्द हमारे स्मृति पटल पर अंकित हो गये और लगा गुरु जी ने बहुत गहरी बात कही है। आज भी कई स्थानों पर हम इसका अनुभव करते हैं।

''पथ प्रदर्शक''

आचार्य गुरुवर करुणामूर्ति हैं उन्हें सदैव उठते बैठते, सोते-जागते 'सर्वेषु जीवेषु कृपापरत्वम्' का ध्यान रहता है। उनका हृदय दूसरों की मंगल भावना से ओत-प्रोत रहता है। वे स्वयं ही मंगल की साक्षात् प्रतिमा हैं। भक्तगण किन्हीं भी कार्य से पूर्व गुरुवर श्री के दर्शन करते हैं जिससे सब मंगल हो और उन्हें तदनुरूप फल की प्राप्ति होती भी है। आत्म कल्याण व आत्म साधना के क्षणों में से समय निकालकर समाज की उन्नति व कल्याण का कार्य करना उनकी करुणा, दया को ही तो प्रदर्शित करता है। कहा भी है स्वचेतनत्व तभी समझ में आता है जब वह साधक परवेदना का अनुभव करता है।

न कदाचनापि परवेदनां, निज वेदना जिन! जनस्य जायते।
गजमीलनेन निपतन्ति बालिशाः पर रक्तिरिक्त चिदुपास्ति मोहिताः॥

अर्थात् जो परवेदना को नहीं जानते और निज को जानने का प्रयत्न करते हैं, वे उसी भांति दुर्गति को प्राप्त हो जाते हैं जैसे आँखें बन्द कर चलने वाला हाथी किसी गहरे गड्ढे में गिर जाता है।

पूज्य गुरुवर जिनकी प्रत्येक समाज के प्रति करुणा स्पष्ट दिखती है। अपने व्यस्ततम समय में से भी समाज की प्रार्थना पर समय निकालकर दे देते हैं चाहे फिर उन्हें कम समय में अधिक ही क्यों न चलना पड़े। वे कहते हैं मुझसे किसी के लिए मना नहीं होती। एक बार संघस्थ किन्हीं मुनि श्री ने कहा महाराज श्री आप का स्वयं का स्वास्थ्य तो अनुकूल है नहीं और आप इतनी समाजों को समय देते हैं, भीड़ झेलते हैं, शंका समाधान करते हैं।

तब गुरु जी ने कहा ''महाराज जी! यदि समाज अपनी समस्या आचार्यों के पास लेकर नहीं आएगी तो कहाँ जायेगी। बालक माता-पिता के पास जाता है और समाज मार्ग निर्देशन प्राप्त करने आचार्यों के पास।'' यह सब कहते हुए करुणा, वात्सल्य मिश्रित उनके मुखमंडल पर जो भाव दृष्टिगोचर हो रहा था वह नि:संदेह अद्‌भुत था।

''गुण रत्नाकर''

भोलापन, निश्छलपना, सरलता, सहजता, मासूमियत ये सब कहते ही एक बालक की आकृति सी सामने आती है क्योंकि ये गुण एक नन्हें बालक में परिलक्षित होते हैं। किन्तु ये गुण यहाँ किसी बालक के नहीं अपितु सागर के समान गंभीर, हिमालय के समान अडिग, आकाश के समान विश्व के समस्त चराचर प्राणियों को अवगाहन देने वाले, एक में अनेक व अनेक में एक पूज्य गुरुवर के हैं। गुरुवर श्री का भोलापन, संकोचपना आदि सभी को उनकी ओर आकर्षित करता है।

सन् 1988 गुरुवर श्री के बचपन की एक घटना है। आचार्य श्री विमल सागर जी महाराज ससंघ धौलपुर पधारे। वैराग्य के अंकुर जिनके हृदय में प्रस्फुटित हो रहे थे ऐसे दिनेश (गुरुवर श्री का पूर्व नाम) ने संघ के दर्शन किये। आचार्य श्री विमल सागर जी महाराज को उन्होंने आहार दिया। तब आचार्य श्री शूद्र जल का त्याग करने वालों से ही आहार ग्रहण करते थे। अतः उनका शूद्र जल का भी त्याग हो गया। उन्होंने पारिवारिक जनों से अनुमति ले आचार्य संघ का धौलपुर से मुरैना तक विहार कराया। शूद्र जल का त्याग तो हो ही चुका था गर्मी में 26 अप्रैल से 3 मई तक लगभग विहार चला। कोई बाहर की वस्तु ग्रहण नहीं कर सकते थे। और कोई व्यक्ति इनके त्याग को जानते भी नहीं थे जो चौके में भोजन हेतु निवेदन कर सकें। उनका संकोच और मासूमियत तो देखो इन्होंने किसी से कुछ कहा भी नहीं। घर से गुड़ चने लेकर आए थे उसी से एक सप्ताह निकाल दिया।

आज भी गुरु जी चाहे कितनी भी प्रतिकूलता हो, कोई शारीरिक कष्ट हो किसी से कुछ भी नहीं कहते। प्रणाम करती हूँ उनके इस भोलेपन, सरलता व सहजता को जो कि मोक्ष प्राप्ति के लिए परमावश्यक है।

''तेरा शुक्रिया है''

गुरुवर श्री के चरणों में आकर प्रत्येक समस्या ऐसे पलायन कर जाती है जैसे सूर्य के आते ही अंधकार अपने अस्तित्व को खो देता है। जिनवाणी चैनल के माध्यम से जिनशासन की प्रभावना में रत श्री नीरज भैया ने वार्तालाप के मध्य बताया कि उन्होंने पूज्य गुरुवर श्री के सर्वप्रथम दर्शन शौरीपुर बटेश्वर में किए। पूज्य गुरुदेव कुएँ के पाट पर बैठे साधनारत थे। गुरुवर श्री के दर्शन कर लगा कि शायद वे गुरु मिल गए जो जीवन की दिशा व दशा परिवर्तित कर सकते हैं। सन् 2006 की बात है स्टार प्लस कंपनी के साथ सुप्रीम कोर्ट में केस चल रहा था। केस बहुत जटिल था क्योंकि प्रतिपक्ष बहुत बलवान था। ये केस जीतना उनके करियर के लिए बहुत महत्वपूर्ण था। वे पूज्य गुरुदेव के चरणों में पहुँचे गुरुवर श्री ने अपने आराध्य बटेश्वर के देवाधिदेव श्री अजितनाथ भगवान के चरणों की आराधना करने को कहा और कहा चिंता मत करो सब अच्छा होगा।

वह दिन आया जब केस का निर्णय होना था। बहस चल रही थी, जज ने प्रतिपक्ष की ओर झुकाव दिखाया। दूसरा पक्ष बहुत प्रसन्न हुआ। जज ने लगभग अपना निर्णय प्रतिपक्ष की ओर सुना ही दिया था। प्रतिपक्ष के सब लोग बाहर चले गए। नीरज भैया ने बताया कि उन्हें लगा शायद अब सब कुछ हाथ से चला गया उन्होंने तुरंत गुरुवर श्री को व अजितनाथ भगवान को नमन किया, जयकार लगायी इतनी ही देर में उनका वकील खड़ा हुआ, अपनी कुछ दलीलें दी तभी जज ने जो प्रतिपक्षी बाहर चले गए थे उन्हें बुलाया और निर्णय नीरज जी जिनवाणी चैनल के पक्ष में सुना दिया।

यह कोई चमत्कार ही था। उन्होंने कहा ''माता जी! आज मैं जो कुछ भी हूँ सिर्फ गुरुवर श्री का आशीर्वाद है। फर्श से अर्श तक की यह यात्रा उन्हीं की कृपादृष्टि से हुई। वे बोले मेरे जीवन की प्रत्येक घटना गुरुवर श्री से जुड़ी है। ऐसी जीवन की एक नहीं अनेक घटनाएँ हैं। जिनवाणी चैनल आज जहाँ भी है वह पूज्य गुरुवर की ही देन है।''

वास्तव में गुरुओं की आराधना में, उनके प्रति श्रद्धा, भक्ति में असंभव को संभव बना देने की शक्ति है।

''वचन शक्ति''

सन् 2017 में सरूरपुर पंचकल्याणक के पश्चात् गुरुवर श्री का विहार छपरौली के लिए चल रहा था। बड़ौत निवासी श्रीमती सारिका जी उसी बीच पूज्य गुरुदेव के दर्शनार्थ पहुँचीं। गुरुवर श्री के दर्शन करते ही उनकी आँखों से आँसू छलक उठे। उन्होंने गुरु जी को बताया कि उनके पति राजीव जी की गाड़ी सुबह पकड़ी गयी वे अभी तक लौटकर नहीं आए, कोई खबर नहीं। गुरु जी ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि चिंता न करो, बस आ ही रहे हैं। पाँच मिनट भी नहीं हुए और वे सामने आकर खड़े हो गए। कई श्रावक भी वहाँ उपस्थित थे जो यह सब देख हैरान थे।

इसी प्रकाश हमारा बौलखेड़ा के लिए विहार चल रहा था। फिरोजाबाद निवासी लाले चाचा भी हमारे साथ थे। उन्होंने कहा माता जी! गुरु जी का तो जवाब ही नहीं है सहजता में कुछ भी कहें वही होता है। उनकी प्रत्येक बात के पीछे कोई रहस्य होता है। दिसम्बर 2003 की बात है। गुरु जी ने लाले चाचा से पूछा आपकी माँ का स्वास्थ्य ठीक है ना। उन्होंने उत्तर देते हुए कहा हाँ महाराज जी बिल्कुल ठीक है। गुरु जी ने कहा ठीक है उन्हें 11 तारीख को ले आना। गुरु जी ने लाले चाचा से ऐसा एक माह के भीतर कई बार कहा। लाले चाचा ने बताया माता जी! मेरी माँ एकदम स्वस्थ थीं। 11 जनवरी 2004 को अचानक उनके प्राणों का अंत हो गया। बोले तब मैं समझा गुरु जी मुझसे बार-बार माँ को 11 तारीख को लाने के लिए क्यों कह रहे थे। यदि मैं ले जाता तो माँ का जन्म सफल हो जाता।

कई लोगों के जीवन में ऐसे एक नहीं कई अनुभव होंगे। पूज्य गुरुदेव के मुख से निकला प्रत्येक शब्द अमोघ है। जिनकी वाणी भव्यों को मोक्ष मार्ग प्रदर्शित करने में समर्थ है ऐसे गुरुओं के चरणों में हम सदा वंदन करते हैं।